# विक्षनरी:संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश/ऊ-अः

< विक्षनरी:संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश

**मूलशब्द—व्याकरण—संधिरहित मूलशब्द—व्युत्पत्ति—हिन्दी अर्थ**

- **ऊः**—पुं॰—-—अवतीति-अव्+क्विप्—शिव
- **ऊः**—पुं॰—-—अवतीति-अव्+क्विप्—चन्द्रमा
- **ऊः**—अव्य॰—-—-—आरम्भ-सूचक अव्यय
- **ऊः**—अव्य॰—-—-—बुलावा
- **ऊः**—अव्य॰—-—-—करुणा
- **ऊः**—अव्य॰—-—-—संरक्षा को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक अव्यय
- **ऊढ**—वि॰—-—वह्+क्त संप्र॰—ढोया गया, ले जाया गया
- **ऊढ**—वि॰—-—वह्+क्त संप्र॰—लिया गया
- **ऊढ**—वि॰—-—वह्+क्त —विवाहित
- **ऊढः**—पुं॰—-—वह्+क्त —विवाहित पुरुष
- **ऊढा**—स्त्री॰—-—वह्+क्त +टाप्—विवाहिता लड़की
- **ऊढकङ्कट**—वि॰—ऊढ-कङ्कट—-—कवचधारी
- **ऊढभार्य**—वि॰—ऊढ-भार्य—-—जिसने विवाह कर लिया है
- **ऊढवयसः**—पुं॰—ऊढ-वयसः—-—नवयुवक
- **ऊढिः**—स्त्री॰—-—वह्+क्तिन्—विवाह
- **ऊतिः**—स्त्री॰—-—अव्+क्तिन्—बुनना, सीना
- **ऊतिः**—स्त्री॰—-—अव्+क्तिन्—संरक्षा
- **ऊतिः**—स्त्री॰—-—अव्+क्तिन्—उपभोग
- **ऊतिः**—स्त्री॰—-—अव्+क्तिन्—क्रीड़ा, खेल
- **ऊधस्**—नपुं॰—-—उन्द्+असुन्, ऊध आदेशः—ऐन, औड़ी
- **ऊधन्यम्**—नपुं॰—-—ऊधन्+यत्—दूध

- **ऊधस्यम्**—नपुं॰—-—ऊधस्+यत्—दूध
- **ऊन**—वि॰—-—ऊन्+अच्—अभावग्रस्त, अधूरा, कम, अपूर्ण, अपर्याप्त
- **ऊन**—वि॰—-—ऊन्+अच्—अपेक्षाकृत कम
- **ऊन**—वि॰—-—ऊन्+अच्—अपेक्षाकृत दुर्बल, घटिया
- **ऊन**—वि॰—-—ऊन्+अच्—घटा कर
- **एकोन**—वि॰—एक-ऊन—-—एक घटा कर
- **ऊम्**—अव्य॰—-—ऊय्+मुक्—प्रश्नवाचकता
- **ऊम्**—अव्य॰—-—ऊय्+मुक्—क्रोध
- **ऊम्**—अव्य॰—-—ऊय्+मुक्—भर्त्सना, दुर्वचन
- **ऊम्**—अव्य॰—-—ऊय्+मुक्—धृष्टता
- **ऊम्**—अव्य॰—-—ऊय्+मुक्—ईर्ष्या को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अव्यय
- **ऊय्**—भ्वा॰ आ॰—-—-—बुनना, सीना
- **ऊररी**—अव्य॰—-—-—सहमति या स्वीकृति बोधक अव्यय
- **ऊररी**—अव्य॰—-—-—विस्तार
- **ऊरव्यः**—पुं॰—-—ऊरु+यत्—वैश्य, तृतीय वर्ण का पुरुष
- **ऊरुः**—पुं॰—-—ऊर्णु+कु, नुलोपः—जंघा
- **ऊर्वष्ठीवम्**—नपुं॰—ऊरुः-अष्ठीवम्—-—जंघा और घुटना
- **ऊरूद्भव**—वि॰—ऊरुः-उद्भव—-—जंघा से उत्पन्न
- **ऊरुज**—वि॰—ऊरुः-ज—-—जंघा से उत्पन्न
- **ऊरुज**—पुं॰—ऊरुः-ज—-—वैश्य
- **ऊरुजन्मन्**—वि॰—ऊरुः-जन्मन्—-—जंघा से उत्पन्न
- **ऊरुजन्मन्**—पुं॰—ऊरुः-जन्मन्—-—वैश्य
- **ऊरुसम्भव**—वि॰—ऊरुः-सम्भव—-—जंघा से उत्पन्न
- **ऊरुसम्भव**—पुं॰—ऊरुः-सम्भव—-—वैश्य
- **ऊरुदघ्न**—वि॰—ऊरुः-दघ्न—-—जंघाओं तक पहुंचने वाला, घुटनों तक
- **ऊरुद्वयस्**—वि॰—ऊरुः-द्वयस्—-—जंघाओं तक पहुंचने वाला, घुटनों तक
- **ऊरुमात्र**—वि॰—ऊरुः-मात्र—-—जंघाओं तक पहुंचने वाला, घुटनों तक

- **ऊरुपर्वन्**—पुं°—ऊरुः-पर्वन्—-—घुटना
- **ऊरुफलकम्**—नपुं°—ऊरुः-फलकम्—-—जांघ की हड्डी, कूल्हे की हड्डी
- **ऊरुरी**—अव्य°—-—उर्+अरीक् बा°—सहमति या स्वीकृति बोधक अव्यय
- **ऊरुरी**—अव्य°—-—उर्+अरीक् बा°—विस्तार
- **ऊर्ज्**—स्त्री°—-—ऊर्ज्+क्विप्—सामर्थ्य, बल
- **ऊर्ज्**—स्त्री°—-—ऊर्ज्+क्विप्—सत्त्व, भोजन
- **ऊर्जः**—पुं°—-—ऊर्ज्+णिच्+अच्—कार्तिक का महीना
- **ऊर्जः**—पुं°—-—ऊर्ज्+णिच्+अच्—स्फूर्ति
- **ऊर्जः**—पुं°—-—ऊर्ज्+णिच्+अच्—सामर्थ्य
- **ऊर्जः**—पुं°—-—ऊर्ज्+णिच्+अच्—प्रजननात्मक शक्ति
- **ऊर्जः**—पुं°—-—ऊर्ज्+णिच्+अच्—जीवन, प्राण
- **ऊर्जा**—स्त्री°—-—-—भोजन
- **ऊर्जा**—स्त्री°—-—-—स्फूर्ति
- **ऊर्जा**—स्त्री°—-—-—सामर्थ्य, सत्त्व
- **ऊर्जा**—स्त्री°—-—-—वृद्धि
- **ऊर्जस्**—नपुं°—-—ऊर्ज्+असुन्—बल, स्फूर्ति
- **ऊर्जस्**—नपुं°—-—ऊर्ज्+असुन्—भोजन
- **ऊर्जस्वत्**—वि°—-—ऊर्जस्+मतुप्—भोज्य-समृद्धि, रसीला
- **ऊर्जस्वत्**—वि°—-—ऊर्जस्+मतुप्—शक्तिशाली
- **ऊर्जस्वल**—वि°—-—ऊर्जस्+वलच्—बड़ा, शक्तिशाली, दृढ़, ताकतवर
- **ऊर्जस्विन्**—वि°—-—उर्जस्+विन्—ताकतवर, दृढ़, बड़ा
- **ऊर्जित**—वि°—-—ऊर्ज्+क्त—शक्तिशाली, दृढ़, ताकतवर, बलशाली, दृढ़
- **ऊर्जित**—वि°—-—ऊर्ज्+क्त—पूज्य, बढ़िया, श्रेष्ठ, सुन्दर
- **ऊर्जित**—वि°—-—ऊर्ज्+क्त—उच्च, भव्य, तेजस्वी, जोशीला या शानदार
- **ऊर्जितम्**—नपुं°—-—ऊर्ज्+क्त—सामर्थ्य, ताकत
- **ऊर्जितम्**—नपुं°—-—ऊर्ज्+क्त—स्फूर्ति
- **ऊर्णम्**—नपुं°—-—ऊर्णु+ड—ऊन

- **ऊर्णम्**—नपुं॰—-—ऊर्णु+ड—ऊनी वस्त्र
- **ऊर्णनाभः**—पुं॰—ऊर्णम्-नाभः—-—मकड़ी
- **ऊर्णनाभिः**—पुं॰—ऊर्णम्-नाभिः—-—मकड़ी
- **ऊर्णपटः**—पुं॰—ऊर्णम्-पटः—-—मकड़ी
- **ऊर्णम्रद**—वि॰—ऊर्णम्-म्रद—-—ऊन की भांति नरम
- **ऊर्णदस्**—वि॰—ऊर्णम्-दस्—-—ऊन की भांति नरम
- **ऊर्णा**—स्त्री॰—-—ऊर्ण+टाप्—ऊन
- **ऊर्णा**—स्त्री॰—-—ऊर्ण+टाप्—भौंहों का मध्यवर्ती केशपुंज
- **ऊर्णापिण्डः**—पुं॰—ऊर्णा-पिण्डः—-—ऊन का गोला
- **ऊर्णायु**—वि॰—-—ऊर्णा+यु—ऊनी
- **ऊर्णायुः**—पुं॰—-—ऊर्णा+यु—मेंढा
- **ऊर्णायुः**—पुं॰—-—ऊर्णा+यु—मकड़ी
- **ऊर्णायुः**—पुं॰—-—ऊर्णा+यु—ऊनी कंबल
- **ऊर्णु**—अदा॰ उभ॰, <ऊर्णोति>, <ऊर्णौति>, <उर्णुते>, <ऊर्णित>—-—-—ढकना, घेरना, छिपाना
- **ऊर्णु**—पुं॰—-—-—ढकना, घेरना, छिपाना
- **प्रौर्णु**—पुं॰—प्र+ऊर्णु—-—ढकना, छिपाना आदि
- **ऊर्ध्व**—वि॰—-—उद्+हा+ड पृषो॰ ऊर् आदेशः—सीधा, खड़ा, ऊपर का, ऊपर की ओर उठता हुआ
- **ऊर्ध्व**—वि॰—-—उद्+हा+ड पृषो॰ ऊर् आदेशः—उठाया हआ, उन्नत, सीधा खड़ा
- **ऊर्ध्व**—वि॰—-—उद्+हा+ड पृषो॰ ऊर् आदेशः—ऊँचा, बढ़िया, अपेक्षाकृत ऊँचा या ऊपर का
- **ऊर्ध्व**—वि॰—-—उद्+हा+ड पृषो॰ ऊर् आदेशः—खड़ा हुआ
- **ऊर्ध्व**—वि॰—-—उद्+हा+ड पृषो॰ ऊर् आदेशः—फटा हुआ, टूटा हुआ
- **ऊर्ध्वम्**—नपुं॰—-—उद्+हा+ड पृषो॰ ऊर् आदेशः—उन्नतता, ऊँचाई
- **ऊर्ध्वम्**—अव्य॰—-—-—ऊपर की ओर, ऊँचाई पर, ऊपर
- **ऊर्ध्वम्**—अव्य॰—-—-—बाद में
- **ऊर्ध्वम्**—अव्य॰—-—-—ऊँचे स्वर से, जोर से
- **ऊर्ध्वम्**—अव्य॰—-—-—बाद में, पश्चात्
- **ऊर्ध्वकच**—वि॰—ऊर्ध्व-कच—-—खड़े बालों वाला

- **ऊर्ध्वकच**—वि०—ऊर्ध्व-कच—-—जिसके बाल टूट गये हों
- **ऊर्ध्वकेश**—वि०—ऊर्ध्व-केश—-—खड़े बालों वाला
- **ऊर्ध्वकेश**—वि०—ऊर्ध्व-केश—-—जिसके बाल टूट गये हों
- **ऊर्ध्वचः**—पुं०—ऊर्ध्व-चः—-—केतु
- **ऊर्ध्वकर्मन्**—नपुं०—ऊर्ध्व-कर्मन्—-—ऊपर को गति
- **ऊर्ध्वकर्मन्**—नपुं०—ऊर्ध्व-कर्मन्—-—ऊँचा पद प्राप्त करने के लिए चेष्टा
- **ऊर्ध्वकर्मन्**—पुं०—ऊर्ध्व-कर्मन्—-—विष्णु
- **ऊर्ध्वक्रिया**—नपुं०—ऊर्ध्व-क्रिया—-—ऊपर को गति
- **ऊर्ध्वक्रिया**—नपुं०—ऊर्ध्व-क्रिया—-—ऊँचा पद प्राप्त करने के लिए चेष्टा
- **ऊर्ध्वक्रिया**—पुं०—ऊर्ध्व-क्रिया—-—विष्णु
- **ऊर्ध्वकायः**—पुं०—ऊर्ध्व-कायः—-—शरीर का ऊपरी भाग
- **ऊर्ध्वकायम्**—नपुं०—ऊर्ध्व-कायम्—-—शरीर का ऊपरी भाग
- **ऊर्ध्वगः**—वि०—ऊर्ध्व-गः—-—ऊपर जाने वाला
- **ऊर्ध्वगामिन्**—वि०—ऊर्ध्व-गामिन्—-—ऊपर जाने वाला
- **ऊर्ध्वगति**—वि०—ऊर्ध्व-गति—-—ऊपर की ओर जाने वाला
- **ऊर्ध्वगमः**—पुं०—ऊर्ध्व-गमः—-—चढ़ाव, उन्नतता
- **ऊर्ध्वगमः**—पुं०—ऊर्ध्व-गमः—-—स्वर्ग में जाना
- **ऊर्ध्वगमनम्**—नपुं०—ऊर्ध्व-गमनम्—-—चढ़ाव, उन्नतता
- **ऊर्ध्वगमनम्**—नपुं०—ऊर्ध्व-गमनम्—-—स्वर्ग में जाना
- **ऊर्ध्वचरण**—वि०—ऊर्ध्व-चरण—-—ऊपर की ओर पैर किये हुए
- **ऊर्ध्वपाद**—वि०—ऊर्ध्व-पाद—-—ऊपर की ओर पैर किये हुए
- **ऊर्ध्वणः**—पुं०—ऊर्ध्व-णः—-—शरभ नाम का एक काल्पनिक जन्तु
- **ऊर्ध्वजानु**—वि०—ऊर्ध्व-जानु—-—घुटने उठाये हुए, पुट्ठों के बल बैठा हुआ
- **ऊर्ध्वजानु**—वि०—ऊर्ध्व-जानु—-—उकडूं बैठा हुआ
- **ऊर्ध्वज्ञ**—वि०—ऊर्ध्व-ज्ञ—-—घुटने उठाये हुए, पुट्ठों के बल बैठा हुआ
- **ऊर्ध्वज्ञ**—वि०—ऊर्ध्व-ज्ञ—-—उकडूं बैठा हुआ
- **ऊर्ध्वज्ञु**—वि०—ऊर्ध्व-ज्ञु—-—घुटने उठाये हुए, पुट्ठों के बल बैठा हुआ

- **ऊर्ध्वज्ञु**—वि°—ऊर्ध्व-ज्ञु—-—उकड़ूं बैठा हुआ
- **ऊर्ध्वदृष्टि**—वि°—ऊर्ध्व-दृष्टि—-—ऊपर को देखता हुआ,
- **ऊर्ध्वदृष्टिः**—स्त्री°—ऊर्ध्व-दृष्टिः—-—उच्चाकांक्षी, महत्त्वाकांक्षी, भौंहों के बीच में अपनी दृष्टि संकेन्द्रित करना
- **ऊर्ध्वनेत्र**—वि°—ऊर्ध्व-नेत्र—-—ऊपर को देखता हुआ,
- **ऊर्ध्वनेत्र**—वि°—ऊर्ध्व-नेत्र—-—उच्चाकांक्षी, महत्त्वाकांक्षी, भौंहों के बीच में अपनी दृष्टि संकेन्द्रित करना
- **ऊर्ध्वदेहः**—पुं°—ऊर्ध्व-देहः—-—अन्त्येष्टि संस्कार
- **ऊर्ध्वपातनम्**—नपुं°—ऊर्ध्व-पातनम्—-—ऊपर चढ़ाना, परिष्करण
- **ऊर्ध्वपात्रम्**—नपुं°—ऊर्ध्व-पात्रम्—-—यज्ञीय पात्र
- **ऊर्ध्वमुख**—वि°—ऊर्ध्व-मुख—-—ऊपर को मुंह किये हुए, उन्मुख
- **ऊर्ध्वमौहूर्तिक**—वि°—ऊर्ध्व-मौहूर्तिक—-—थोड़ी देर के पश्चात् होने वाला
- **ऊर्ध्वरेतस्**—वि°—ऊर्ध्व-रेतस्—-—अनवरत ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला, स्त्री-संभोग से सदैव विरत रहने वाला
- **ऊर्ध्वरेतस्**—पुं°—ऊर्ध्व-रेतस्—-—शिव
- **ऊर्ध्वरेतस्**—पुं°—ऊर्ध्व-रेतस्—-—भीष्म
- **ऊर्ध्वलोकः**—पुं°—ऊर्ध्व-लोकः—-—ऊपर की दुनिया, स्वर्ग
- **ऊर्ध्ववर्त्मन्**—पुं°—ऊर्ध्व-वर्त्मन्—-—पर्यावरण
- **ऊर्ध्ववातः**—पुं°—ऊर्ध्व-वातः—-—शरीर के ऊपरी भाग में रहने वाली वायु
- **ऊर्ध्ववायुः**—पुं°—ऊर्ध्व-वायुः—-—शरीर के ऊपरी भाग में रहने वाली वायु
- **ऊर्ध्वशायिन्**—वि°—ऊर्ध्व-शायिन्—-—ऊपर को मुंह करके चित सोया हुआ
- **ऊर्ध्वशायिन्**—पुं°—ऊर्ध्व-शायिन्—-—शिव
- **ऊर्ध्वशोधनम्**—नपुं°—ऊर्ध्व-शोधनम्—-—वमन करना
- **ऊर्ध्वश्वासः**—पुं°—ऊर्ध्व-श्वासः—-—साँस छोड़ना, प्राण त्यागना
- **ऊर्ध्वस्थितिः**—स्त्री°—ऊर्ध्व-स्थितिः—-—अश्व पालन
- **ऊर्ध्वस्थितिः**—स्त्री°—ऊर्ध्व-स्थितिः—-—घोड़े की पीठ
- **ऊर्ध्वस्थितिः**—स्त्री°—ऊर्ध्व-स्थितिः—-—उन्नतता, श्रेष्ठता
- **ऊर्मिः**—पुं°—-—ऋ+मि, अर्तेरुच्च—लहर, झाल
- **ऊर्मिः**—पुं°—-—ऋ+मि, अर्तेरुच्च—धाराप्रवाह
- **ऊर्मिः**—पुं°—-—ऋ+मि, अर्तेरुच्च—प्रकाश

- **ऊर्मिः**—पुं°—–—ऋ+मि, अर्तेरुच्च—गति, वेग
- **ऊर्मिः**—पुं°—–—ऋ+मि, अर्तेरुच्च—कष्ट, बेचैनी, चिन्ता
- **ऊर्मिमालिन्**—वि°—ऊर्मिः-मालिन्—–—तरंग मालाओं से विभूषित
- **ऊर्मिमालिन्**—पुं°—ऊर्मिः-मालिन्—–—समुद्र
- **ऊर्मिका**—स्त्री°—–—ऊर्मि+कन्+टाप्—लहर,
- **ऊर्मिका**—स्त्री°—–—ऊर्मि+कन्+टाप्—अंगूठी
- **ऊर्मिका**—स्त्री°—–—ऊर्मि+कन्+टाप्—खेद, खोई वस्तु के लिए शोक
- **ऊर्मिका**—स्त्री°—–—ऊर्मि+कन्+टाप्—मक्खी का भिनभिनाना
- **ऊर्मिका**—स्त्री°—–—ऊर्मि+कन्+टाप्—वस्त्र में पड़ी शिकन या चुन्नट
- **ऊर्व**—वि°—–—उरु+अ—विस्तृत, बड़ा
- **ऊर्वः**—पुं°—–—उरु+अ—वडवानल
- **ऊर्वरा**—स्त्री°—–—उरु शस्यादिकमृच्छति-ऋ+अच्+टाप्—उपजाऊ भूमि
- **ऊलुपिन्**—पुं°—–—–—शिंशुक, सूँस
- **ऊलूकः**—पुं°—–—–—उल्लू
- **ऊलूकः**—पुं°—–—–—इन्द्र
- **ऊष्**—भ्वा° पर°—–—–—रुग्ण होना, अस्वस्थ होना, बीमार होना
- **ऊषः**—पुं°—–—ऊष्+क—रिहाली धरती
- **ऊषः**—पुं°—–—ऊष्+क—अम्ल
- **ऊषः**—पुं°—–—ऊष्+क—दरार, तरेड़
- **ऊषः**—पुं°—–—ऊष्+क—कर्णविवर
- **ऊषः**—पुं°—–—ऊष्+क—मलय पर्वत
- **ऊषः**—पुं°—–—ऊष्+क—प्रभात, पौ फटना
- **ऊषकम्**—नपुं°—–—ऊष+कन्—प्रभात, पौ फटना
- **ऊषणम्**—नपुं°—–—ऊष्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च—काली मिर्च
- **ऊषणम्**—नपुं°—–—ऊष्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च—अदरक
- **ऊषणा**—स्त्री°—–—ऊष्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च—काली मिर्च
- **ऊषणा**—स्त्री°—–—ऊष्+ल्युट्, स्त्रियां टाप् च—अदरक

- **ऊषर**—वि॰—-—ऊष्+रा+क—नमक या रेहकणों से युक्त
- **ऊषरः**—पुं॰—-—ऊष्+रा+क—बंजर भूमि जो रिहाल हो
- **ऊषरम्**—नपुं॰—-—ऊष्+रा+क—बंजर भूमि जो रिहाल हो
- **ऊषवत्**—वि॰—-—-—नमक या रेहकणों से युक्त
- **ऊष्मः**—पुं॰—-—ऊष्+मक्—ताप
- **ऊष्मः**—पुं॰—-—ऊष्+मक्—ग्रीष्म ऋतु
- **ऊष्मन्**—पुं॰—-—ऊष्+मनिन्—ताप, गर्मी
- **ऊष्मन्**—पुं॰—-—ऊष्+मनिन्—ग्रीष्म ऋतु, निदाघ
- **ऊष्मन्**—पुं॰—-—ऊष्+मनिन्—भाप, वाष्प, उच्छ्वास
- **ऊष्मन्**—पुं॰—-—ऊष्+मनिन्—सरगरमी, जोश, प्रचण्डता
- **ऊष्मन्**—पुं॰—-—ऊष्+मनिन्—श्, ष्, स् और ह् की ध्वनियाँ
- **ऊष्मोपगमः**—पुं॰—ऊष्मन्-उपगमः—-—ग्रीष्म ऋतु का आगमन
- **ऊष्मपः**—पुं॰—ऊष्मन्-पः—-—अग्नि
- **ऊष्मपः**—पुं॰—ऊष्मन्-पः—-—पितरों की एक श्रेणी
- **ऊह्**—भ्वा॰ उभ॰, <ऊहति>, <ऊहते>, <ऊहित>—-—-—टाँकना, अंकित करना, अवक्षेण करना
- **ऊह्**—भ्वा॰ उभ॰, <ऊहति>, <ऊहते>, <ऊहित>—-—-—अटकल लगाना, अंदाज करना, अनुमान लगाना
- **ऊह्**—भ्वा॰ उभ॰, <ऊहति>, <ऊहते>, <ऊहित>—-—-—समझना, सोचना, पहचानना, आशा करना
- **ऊह्**—भ्वा॰ उभ॰, <ऊहति>, <ऊहते>, <ऊहित>—-—-—तर्क करना, विचार करना
- **ऊह्**—भ्वा॰ उभ॰—-—-—तर्क या चिन्तन करवाना, अनुमान या अटकल लगवाना
- **अपोह्**—भ्वा॰ उभ॰—अप-ऊह्—-—हटाना, दूर करना
- **अपोह्**—भ्वा॰ उभ॰—अप-ऊह्—-—तुरन्त अनुकरण करना
- **अपव्यूह्**—भ्वा॰ उभ॰—अपवि-ऊह्—-—रोकना, हटाना
- **अभ्यूह्**—भ्वा॰ उभ॰—अभि-ऊह्—-—अटकल लगाना, अंदाज लगाना
- **अभ्यूह्**—भ्वा॰ उभ॰—अभि-ऊह्—-—ढकना
- **उपोह्**—भ्वा॰ उभ॰—उप-ऊह्—-—निकट लाना
- **निर्व्यूह्**—भ्वा॰ उभ॰—निर्वि-ऊह्—-—सम्पन्न करना, प्रकाशित करना
- **परिसमूह्**—भ्वा॰ उभ॰—परिसम्-ऊह्—-—इधर-उधर छिड़कना

- **प्रत्यूह्**—भ्वा० उभ०—प्रति-ऊह्—-—विरोध करना, बाधा डालना, रुकावट डालना
- **प्रत्यूह्**—भ्वा० उभ०—प्रति-ऊह्—-—मुकरना
- **प्रतिव्यूह्**—भ्वा० उभ०—प्रतिवि-ऊह्—-—शत्रु के विरुद्ध सैनिक मोर्चा लगाना
- **व्यूह्**—भ्वा० उभ०—वि-ऊह्—-—युद्ध के अवसर पर सेना की व्यवस्था करना
- **समूह्**—भ्वा० उभ०—सम्-ऊह्—-—एकत्र करना, इकट्ठे होना
- **ऊहः**—पुं०—-—ऊह्+घञ्—अटकल, अंदाज
- **ऊहः**—पुं०—-—ऊह्+घञ्—परीक्षण, निर्धारण
- **ऊहः**—पुं०—-—ऊह्+घञ्—समझ-बूझ
- **ऊहः**—पुं०—-—ऊह्+घञ्—तर्कना, युक्ति देना
- **ऊहः**—पुं०—-—ऊह्+घञ्—अध्याहार करना
- **ऊहापोहः**—पुं०—ऊहः-अपोहः—-—पूरी चर्चा, अनुकूल व प्रतिकूल स्थितियों पर पूरा सोच-विचार
- **ऊहनम्**—नपुं०—-—ऊह्+ल्युट्—अनुमान लगाना, अटकलबाजी
- **ऊहनी**—स्त्री०—-—ऊहन+ङीप्—झाडू, बुहारी
- **ऊहिन्**—वि०—-—ऊह्+इनि—तर्क करने वाला, अनुमान लगाने वाला
- **ऊहिनी**—स्त्री०—-—ऊह्+इनि+ङीप्—संघात, संचय
- **ऊहिनी**—स्त्री०—-—ऊह्+इनि+ङीप्—क्रम, क्रमबद्ध समुदाय
- **ऋ** —अव्य०—-—-—बुलाना,परिहास और निन्दा या अपशब्दव्यंजक विस्मयादिबोधक अव्यय
- **ऋ** —भ्वा० पर०<ऋच्छति, ऋत>—-—-—जाना, हिलना-डुलना
- **ऋ** —भ्वा० पर०<ऋच्छति, ऋत>—-—-—उठाना, उन्मुख होना
- **ऋ** —जु० पर०<इयर्ति, ऋत>—-—-—जाना,
- **ऋ** —जु० पर०<इयर्ति, ऋत>—-—-—हिलना-डुलना, डगमग होना
- **ऋ** —जु० पर०<इयर्ति, ऋत>—-—-—प्राप्त करना, अवाप्त करना, अधिगत करना, भेंट होना,
- **ऋ** —जु० पर०<इयर्ति, ऋत>—-—-—चलायमान करना, उत्तेजित करना
- **ऋ** —स्वा० पर०<ऋणोति, ऋण>—-—-—चोट पहुँचाना, घायल करना
- **ऋ** —स्वा० पर०<ऋणोति, ऋण>—-—-—आक्रमण करना
- **ऋ** —स्वा० पर०,प्रेर०—-—-—फेंकना, ढालना, स्थिर करना या जमाना
- **ऋ** —स्वा० पर०,प्रेर०—-—-—रखना, स्थापित करना, स्थिर करना, निर्देश देना या फेरना

- **ऋ** —स्वा० पर०,प्रेर०————रखना, सम्मिलित करना, देना, बैठा देना, जमा देना
- **ऋ** —स्वा० पर०,प्रेर०————सौंपना, दे देना, सुपुर्द कर देना, हवाले कर देना
- **ऋक्ण**—वि०——व्रश्च-क्त पृषो० वलोपः—घायल, क्षत-विक्षत, आहत
- **ऋक्थम्**—नपुं०——ऋच्-थक्—धन-दौलत
- **ऋक्थम्**—नपुं०——ऋच्-थक्—विशेषकर सम्पत्ति, हस्तगत सामग्री या सामान
- **ऋक्थम्**—नपुं०——ऋच्-थक्—सोना
- **ऋक्थग्रहणम्**—नपुं०—ऋक्थम्-ग्रहणम्——प्राप्त करना या उत्तराधिकार में पाना
- **ऋक्थग्राहः**—पुं०—ऋक्थम्-ग्राहः——उत्तराधिकारी या संपत्ति का प्राप्तकर्ता
- **ऋक्थभागः**—पुं०—ऋक्थम्-भागः——संपत्ति का बँटवारा, विभाजन
- **ऋक्थभागः**—पुं०—ऋक्थम्-भागः——अंश, दाय
- **ऋक्थभागिन्**—पुं०—ऋक्थम्-भागिन्——उत्तराधिकारी
- **ऋक्थभागिन्**—पुं०—ऋक्थम्-भागिन्——सह उत्तराधिकारी
- **ऋक्थहर**—पुं०—ऋक्थम्-हर——उत्तराधिकारी
- **ऋक्थहर**—पुं०—ऋक्थम्-हर——सह उत्तराधिकारी
- **ऋक्थहारिन्**—पुं०—ऋक्थम्-हारिन्——उत्तराधिकारी
- **ऋक्थहारिन्**—पुं०—ऋक्थम्-हारिन्——सह उत्तराधिकारी
- **ऋक्षः**—पुं०——ऋष्-स किच्च—रीक्ष
- **ऋक्षः**—पुं०——ऋष्-स किच्च—पर्वत का नाम
- **ऋक्षः**—पुं०————तारा, तारकपुंज, नक्षत्र
- **ऋक्षः**—पुं०————राशिमाला का चिह्न, राशि
- **ऋक्षम्**—नपुं०————तारा, तारकपुंज, नक्षत्र
- **ऋक्षम्**—नपुं०————राशिमाला का चिह्न, राशि
- **ऋक्षाः**—पुं०————कृत्तिका-मण्डल के सात तारे, जो बाद मे सप्तर्षि कहलाए
- **ऋक्षा**—स्त्री०————उत्तर दिशा
- **ऋक्षी**—स्त्री०————रीछनी, मादा भालू
- **ऋक्षचक्रम्**—नपुं०—ऋक्षः-चक्रम्——तारामंडल
- **ऋक्षनाथः**—पुं०—ऋक्षः-नाथः——'तारों का स्वामी', चन्द्रमा

- **ऋक्षेशः**—पुं°—ऋक्षः-ईशः—–—'तारों का स्वामी', चन्द्रमा
- **ऋक्षनेमिः**—पुं°—ऋक्षः-नेमिः—–—विष्णु
- **ऋक्षराज्**—पुं°—ऋक्षः-राज्—–—चन्द्रमा
- **ऋक्षराज्**—पुं°—ऋक्षः-राज्—–—रीछों का स्वामी, जांबवान्
- **ऋक्षराजः**—पुं°—ऋक्षः-राजः—–—चन्द्रमा
- **ऋक्षराजः**—पुं°—ऋक्षः-राजः—–—रीछों का स्वामी, जांबवान्
- **ऋक्षहरीश्वरः**—पुं°—ऋक्षः-हरीश्वरः—–—रीछों और लंगुरों का स्वामी
- **ऋक्षरः**—पुं°—–—ऋष्-क्सरन्—ऋत्विज
- **ऋक्षरः**—पुं°—–—–—काँटा
- **ऋक्षवत्**—पुं°—–—ऋक्ष-मतुप्-मस्य वः—नर्मदा के निकट स्थित एक पहाड़
- **ऋच्**—तुदा° पर°<ऋचति>—–—–—प्रशंसा करना, स्तुति गान करना
- **ऋच्**—तुदा° पर°<ऋचति>—–—–—ढकना, पर्दा डालना
- **ऋच्**—तुदा° पर°<ऋचति>—–—–—चमकना
- **ऋच्**—स्त्री°—–—ऋच्-क्विप्—सूक्त
- **ऋच्**—स्त्री°—–—ऋच्-क्विप्—ऋग्वेद का मंत्र, ऋचा
- **ऋच्**—स्त्री°,ब° व°—–—ऋच्-क्विप्—ऋक्संहिता
- **ऋच्**—स्त्री° —–—ऋच्-क्विप्—दीप्ति
- **ऋच्**—स्त्री° —–—ऋच्-क्विप्—प्रशंसा
- **ऋच्**—स्त्री° —–—ऋच्-क्विप्—पूजा
- **ऋग्विधानम्**—नपुं°—ऋच्-विधानम्—–—ऋग्वेद के मंत्रों का पाठ करके कुछ संस्कारों का अनुष्ठान
- **ऋग्वेदः**—पुं°—ऋच्-वेदः—–—चारों वेदों में सबसे पुराना वेद, हिन्दुओं का अत्यंत पवित्र और प्राचीन ग्रन्थ
- **ऋग्संहिता**—स्त्री° —ऋच्-संहिता—–—ऋग्वेद के सूक्तों का क्रम्बद्ध संग्रह
- **ऋचीषः**—पुं°—–—ऋच्-ईषन्—घण्टी
- **ऋचीषम्**—नपुं°—–—–—कड़ाही
- **ऋछ्**—तुदा° पर°<ऋच्छति>—–—–—कड़ा, या सख्त होना
- **ऋछ्**—तुदा° पर°<ऋच्छति>—–—–—जाना
- **ऋछ्**—तुदा° पर°<ऋच्छति>—–—–—क्षमता का न रहना

- **ऋच्छका**—स्त्री° ——ऋच्छ्-कन्-टाप्—कामना, इच्छा
- **ऋज्**—भ्वा° आ°<अर्जते, ऋजित>————जाना
- **ऋज्**—भ्वा° आ°<अर्जते, ऋजित>————प्राप्त करना, हासिल करना
- **ऋज्**—भ्वा° आ°<अर्जते, ऋजित>————खड़े होना या स्थिर होना
- **ऋज्**—भ्वा° आ°<अर्जते, ऋजित>————स्वस्थ या हृष्ट-पुष्ट होना
- **ऋज्**—भ्वा° पर°————अवाप्त करना, उपार्जन करना
- **ऋजीष**—पुं°————घण्टी
- **ऋजु**—वि°——अर्जयति गुणान्, अर्ज्-उ—सीधा
- **ऋजु**—वि°——अर्जयति गुणान्, अर्ज्-उ—खरा, ईमानदार, स्पष्टवादी
- **ऋजु**—वि°——अर्जयति गुणान्, अर्ज्-उ—अनुकूल, अच्छा
- **ऋजुक्**—वि°————सीधा
- **ऋजुक्**—वि°————खरा, ईमानदार, स्पष्टवादी
- **ऋजुक्**—वि°————अनुकूल, अच्छा
- **ऋजुगः**—पुं°—ऋजु-गः——व्यवहार में ईमानदार
- **ऋजुगः**—पुं°—ऋजु-गः——तीर
- **ऋजुरोहितम्**—नपुं°—ऋजु-रोहितम्——इन्द्र का सीधा लाल धनुष
- **ऋज्वी**—स्त्री° ——ऋजु-ङीष्—सीधीसाधी सरल स्त्री
- **ऋज्वी**—स्त्री° ——ऋजु-ङीष्—तारों की विशेष गति
- **ऋणम्**—नपुं°——ऋ-क्त—कर्जा, पितरों को दिया जानेवाला अन्तिम ऋण अर्थात् पुत्रोत्पादन
- **ऋणम्**—नपुं°——ऋ-क्त—कर्तव्यता, दायित्व
- **ऋणम्**—नपुं°——ऋ-क्त—नकारात्मक चिह्न या परिमाण, घटा-चिह्न
- **ऋणम्**—नपुं°——ऋ-क्त—किला, दुर्ग
- **ऋणम्**—नपुं°——ऋ-क्त—पानी
- **ऋणम्**—नपुं°——ऋ-क्त—भूमि
- **ऋणान्तकः**—पुं°—ऋणम्-अन्तकः——मंगल ग्रह
- **ऋणापनयनम्**—नपुं°—ऋणम्-अपनयनम्——ऋणपरिशोध करना, ऋण चुकाना,
- **ऋणापनयनम्**—नपुं°—ऋणम्-अपनोदनम्——ऋणपरिशोध करना, ऋण चुकाना,

- **ऋणापाकरणम्**—नपुं°—ऋणम्-अपाकरणम्—-—ऋणपरिशोध करना, ऋण चुकाना,
- **ऋणदानम्**—नपुं°—ऋणम्-दानम्—-—ऋणपरिशोध करना, ऋण चुकाना,
- **ऋणमुक्ति**—स्त्री° —ऋणम्-मुक्तिः—-—ऋणपरिशोध करना, ऋण चुकाना,
- **ऋणमोक्षः**—पुं°—ऋणम्-मोक्षः—-—ऋणपरिशोध करना, ऋण चुकाना,
- **ऋणशोधनम्**—नपुं°—ऋणम्-शोधनम्—-—ऋणपरिशोध करना, ऋण चुकाना,
- **ऋणादानम्**—नपुं°—ऋणम्-आदानम्—-—कर्जा वसूल करना, उधार दिया हुआ द्रव्य वापिस लेना
- **ऋणऋणम्**—नपुं°—ऋणम्-ऋणम्—-—एक कर्ज के लिए दूसरा कर्ज, एक ऋण चुकाने के लिए दूसरा ऋण ले लेना
- **ऋणग्रहः**—पुं°—ऋणम्-ग्रहः—-—रुपया उधार लेना, उधार लेने वाला
- **ऋणदातृ**—वि°—ऋणम्-दातृ—-—जो ऋण दे देता है
- **ऋणदायिन्**—वि°—ऋणम्-दायिन्—-—जो ऋण दे देता है
- **ऋणदासः**—पुं°—ऋणम्-दासः—-—वह क्रीत दास जिसका ऋण परिशोध करके उसे लिया गया है
- **ऋणमत्कुणः**—पुं°—ऋणम्-मत्कुणः—-—प्रतिभूति, जमानत
- **ऋणमार्गणः**—पुं°—ऋणम्-मार्गणः—-—प्रतिभूति, जमानत
- **ऋणमुक्त**—वि°—ऋणम्-मुक्त—-—ऋण से मुक्त
- **ऋणमुक्तिः**—नपुं°—ऋणम्-अपनयनम्—-—ऋणपरिशोध करना, ऋण चुकाना,
- **ऋणमुक्तिः**—नपुं°—ऋणम्-अपनोदनम्—-—ऋणपरिशोध करना, ऋण चुकाना,
- **ऋणलेख्यम्**—नपुं°—ऋणम्-लेख्यम्—-—ऋण-बन्धपत्र' तमस्सुक जिसमें ऋण की स्वीकृति दर्ज हो
- **ऋणिकः**—पुं°—-—ऋण-ष्ठन्—कर्जदार
- **ऋणिन्**—वि°—-—ऋण्-इनि—ऋणग्रस्त, अनुगृहीत
- **ऋत**—वि°—-—ऋ-क्त—उचित, सही
- **ऋत**—वि°—-—ऋ-क्त—ईमानदार, सच्चा
- **ऋत**—वि°—-—ऋ-क्त—पूजित, प्रतिष्ठाप्राप्त
- **ऋतम्**—अव्य°—-—ऋ-क्त—सही ढंग से, उचित रीति से
- **ऋतम्**—नपुं°—-—ऋ-क्त—स्थिर और निश्चित नियम, विधि
- **ऋतम्**—नपुं°—-—ऋ-क्त—पावन प्रथा
- **ऋतम्**—नपुं°—-—ऋ-क्त—दिव्य नियम, दिव्य सचाई
- **ऋतम्**—नपुं°—-—ऋ-क्त—जल

- **ऋतम्**—नपुं°—-—ऋ-क्त—सचाई, अधिकार
- **ऋतम्**—नपुं°—-—ऋ-क्त—खेतों में उञ्छवृत्ति द्वारा जीविका
- **ऋतधामन्**—वि°—ऋत-धामन्—-—सच्चे या पवित्र स्वभाव वाला
- **ऋतधामन्**—पुं°—ऋत-धामन्—-—विष्णु
- **ऋतीया**—स्त्री° —-—ऋत-ईयङ्-टाप्—निन्दा, भर्त्सना
- **ऋतु**—पुं°—-—ऋ-तु, कित्—मौसम, वर्ष का एक भाग
- **ऋतु**—पुं°—-—-—युगारंभ, निश्चित काल
- **ऋतु**—पुं°—-—-—आर्तव, ऋतुस्राव, माहवारी
- **ऋतु**—पुं°—-—-—गर्भाधान के लिए उपयुक्त काल
- **ऋतु**—पुं°—-—-—उपयुक्त मौसम या ठीक समय
- **ऋतु**—पुं°—-—-—प्रकाश, आभा
- **ऋतु**—पुं°—-—-—छः की संज्ञा के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति
- **ऋतुकालः**—पुं°—ऋतु-कालः—-—गर्भाधान के लिए अनुकूल समय अर्थात् ऋतुस्राव से लेकर १६ रातें
- **ऋतुकालः**—पुं°—ऋतु-कालः—-—गर्भाधान के लिए उपयुक्त काल
- **ऋतुकालः**—पुं°—ऋतु-कालः—-—मौसम की अवधि
- **ऋतुसमयः**—पुं°—ऋतु-समयः—-—गर्भाधान के लिए अनुकूल समय अर्थात् ऋतुस्राव से लेकर १६ रातें
- **ऋतुसमयः**—पुं°—ऋतु-समयः—-—गर्भाधान के लिए उपयुक्त काल
- **ऋतुसमयः**—पुं°—ऋतु-समयः—-—मौसम की अवधि
- **ऋतुवेला**—स्त्री° —ऋतु-वेला—-—गर्भाधान के लिए अनुकूल समय अर्थात् ऋतुस्राव से लेकर १६ रातें
- **ऋतुवेला**—स्त्री° —ऋतु-वेला—-—गर्भाधान के लिए उपयुक्त काल
- **ऋतुवेला**—स्त्री° —ऋतु-वेला—-—मौसम की अवधि
- **ऋतुकणः**—पुं°—ऋतु-कणः—-—ऋतुओं का समुदाय
- **ऋतुगामिन्**—पुं°—ऋतु-गामिन्—-—स्त्री से संभोग करने वाला
- **ऋतुपर्णः**—पुं°—ऋतु-पर्णः—-—अयोध्या के राजा का नाम, आयुतायु का पुत्र, इक्ष्वाकु की सन्तान
- **ऋतुपर्यायः**—पुं°—ऋतु-पर्यायः—-—ऋतुओं का आना-जाना
- **ऋतुवृत्तिः**—स्त्री° —ऋतु-वृत्तिः—-—ऋतुओं का आना-जाना
- **ऋतुमुखम्**—नपुं°—ऋतु-मुखम्—-—ऋतु का आरम्भ या पहला दिन

- **ऋतुराजः**—पुं॰—ऋतु-राजः—-—वसन्त ऋतु
- **ऋतुलिङ्गम्**—नपुं॰—ऋतु-लिङ्गम्—-—राजःस्राव का लक्षण या चिह्न
- **ऋतुलिङ्गम्**—नपुं॰—ऋतु-लिङ्गम्—-—मासिक स्राव का चिह्न
- **ऋतुसन्धिः**—स्त्री॰ —ऋतु-सन्धिः—-—दो ऋतुओं का मिलन
- **ऋतुस्नाता**—स्त्री॰ —ऋतु-स्नाता—-—रजोदर्शन के पश्चात् स्नान करके निवृत हुई, और इसीलिए संभोग के लिए उपयुक्त स्त्री
- **ऋतुस्नानम्**—नपुं॰—ऋतु-स्नानम्—-—रजोदर्शन के पश्चात् स्नान करना
- **ऋतुमती**—स्त्री॰ —-—ऋतु-मतुप्-ङीप्—रजस्वला स्त्री
- **ऋते**—अव्य॰—-—-—सिवाय, बिना
- **ऋत्विज्**—पुं॰—-—ऋतु-यज्-क्विन्—यज्ञ के पुरोहित के रूप मे कार्य करने वाला
- **ऋद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—ऋध्-क्त—सम्पन्न, फलता-फूलता, धनवान
- **ऋद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—-—वृद्धि-प्राप्त, वर्धमान
- **ऋद्ध**—भू॰ क॰ कृ॰—-—-—जमा किया हुआ
- **ऋद्धः**—पुं॰—-—-—विष्णु
- **ऋद्धम्**—नपुं॰—-—-—वृद्धि, विकास
- **ऋद्धम्**—नपुं॰—-—-—प्रर्दशित उपसंहार, स्पष्ट परिणाम
- **ऋद्धिः**—स्त्री॰—-—ऋध्-क्तिन्—विकास, वृद्धि
- **ऋद्धिः**—स्त्री॰—-—-—सफलता, सम्पन्नता, बहुतायत
- **ऋद्धिः**—स्त्री॰—-—-—विस्तार, विस्तृति, विभूति
- **ऋद्धिः**—स्त्री॰—-—-—अतिप्राकृतिक शक्ति, सर्वोपरिता
- **ऋद्धिः**—स्त्री॰—-—-—सम्पन्नता
- **ऋध्**—दिवा॰ स्वा॰ पर॰<ऋध्यति, ऋध्नोति, ऋद्ध>—-—-—सम्पन्न होना, समृद्ध होना, सफल होना
- **ऋध्**—दिवा॰ स्वा॰ पर॰<ऋध्यति, ऋध्नोति, ऋद्ध>—-—-—विकसित होना, बढना,
- **ऋध्**—दिवा॰ स्वा॰ पर॰<ऋध्यति, ऋध्नोति, ऋद्ध>—-—-—संतुष्ट करना, तृप्त करना, प्रसन्न करना, मनाना
- **समृध्**—वि॰—सम्-ऋध्—-—फलना-फूलना
- **ऋभुः**—पुं॰—-—अरि स्वर्गे अदितौ वा भवति इति - ऋ-भू-डु—देवता, दिव्यता, देव
- **ऋभुक्षः**—पुं॰—-—ऋभवो देवा क्षियन्ति वसन्ति अत्रेति - ऋभु-क्षि-ड—इन्द्र
- **ऋभुक्षः**—पुं॰—-—-—स्वर्ग

- **ऋभुक्षिन्**—पुं°—-—ऋभुक्षः वज्रं स्वर्गो वास्यास्ति-इनि—इन्द्र
- **ऋल्लकः**—पुं°—-—-—एक प्रकार के वाद्ययंत्र को बजाने वाला
- **ऋश्यः**—पुं°—-—ऋश्-क्यप्—सफेद पैरों वाला बारहसिंघा हरिण
- **ऋश्यम्**—नपुं°—-—-—हत्या
- **ऋश्यकेतुः**—पुं°—ऋश्य-केतुः—-—अनिरुद्ध, प्रद्युम्न का पुत्र
- **ऋश्यकेतुः**—पुं°—ऋश्य-केतुः—-—कामदेव
- **ऋश्यकेतनः**—पुं°—ऋश्य-केतनः—-—अनिरुद्ध, प्रद्युम्न का पुत्र
- **ऋश्यकेतनः**—पुं°—ऋश्य-केतनः—-—कामदेव
- **ऋष्**—तुदा° पर° <ऋषति>, <ऋष्ट>—-—-—जाना, पहुँचना
- **ऋष्**—तुदा° पर° <ऋषति>, <ऋष्ट>—-—-—मार डालना, चोट पहुँचाना
- **ऋष्**—भ्वा° पर° <अर्षति>—-—-—बहना
- **ऋष्**—भ्वा° पर° <अर्षति>—-—-—फिसलना
- **ऋषभः**—पुं°—-—ऋशष्-अभक्—साँड़
- **ऋषभः**—पुं°—-—-—श्रेष्ठ, सर्वश्रेष्ठ
- **ऋषभः**—पुं°—-—-—संगीत के सात स्वरों मे से दूसरा
- **ऋषभः**—पुं°—-—-—सूअर की पूँछ
- **ऋषभः**—पुं°—-—-—मगरमच्छ की पूँछ
- **ऋषभी**—स्त्री°—-—-—पुरुष के आकार प्रकार की स्त्री
- **ऋषभी**—स्त्री°—-—-—गाय
- **ऋषभी**—स्त्री°—-—-—विधवा
- **ऋषभकूटः**—पुं°—ऋषभः-कूटः—-—एक पहाड़ का नाम
- **ऋषभध्वजः**—पुं°—ऋषभः-ध्वजः—-—शिव
- **ऋषिः**—पुं°—-—ऋष्-इन्, कित्—एक अन्तःस्फूर्त कवि या मुनि, मंत्र द्रष्टा
- **ऋषिः**—पुं°—-—-—पुण्यात्मा मुनि, सन्यासी, विरक्त योगी
- **ऋषिः**—पुं°—-—-—प्रकाश की किरण
- **ऋषिकुल्या**—स्त्री°—ऋषिः-कुल्या—-—पवित्र नदी
- **ऋषितर्पणम्**—नपुं°—ऋषिः-तर्पणम्—-—ऋषियों की सेवा में प्रस्तुत किया गया तर्पण

- **ऋषिपंचमी**—स्त्री°—ऋषिः-पंचमी—-—भाद्रपदकृष्णा पंचमी को होनेवाला एक पर्व
- **ऋषिलोकः**—पुं°—ऋषिः-लोकः—-—ऋषियों क संसार
- **ऋषिस्तोमः**—पुं°—ऋषिः-स्तोमः—-—ऋषियों का स्तुति-गान
- **ऋषिस्तोमः**—पुं°—ऋषिः-स्तोमः—-—एक दिन में समाप्त होनेवाला एक विशेष यज्ञ
- **ऋष्टिः**—पुं°—-—ऋष्-क्तिन्—दुधारी तलवार
- **ऋष्टिः**—पुं°—-—ऋष्-क्तिन्—तलवार, कृपाण
- **ऋष्टिः**—पुं°—-—ऋष्-क्तिन्—शस्त्र
- **ऋष्यः**—पुं°—-—ऋष्-क्यप्—सफेद पैरों वाला बारहसिंघा हरिण
- **ऋष्यङ्कः**—पुं°—ऋष्यः-अङ्कः—-—अनिरुद्ध
- **ऋष्यकेतनः**—पुं°—ऋष्यः-केतनः—-—अनिरुद्ध
- **ऋष्यकेतुः**—पुं°—ऋष्यः-केतुः—-—अनिरुद्ध
- **ऋष्यमूकः**—पुं°—ऋष्यः-मूकः—-—पंपा सरोवर के निकट स्थित एक पर्वत जहां कुछ दिनों तक राम वानरराज सुग्रीव के साथ रहे थे
- **ऋष्यशृङ्गः**—पुं°—ऋष्यः-शृङ्गः—-—एक मुनि का नाम
- **ऋष्यकः**—पुं°—-—ऋष्-कन्—चित्तीदार सफेद पैरों वाला बारहसिंघा हरिण
- **ॠ**—अव्य°—-—-—त्रास
- **ॠ**—अव्य°—-—-—दुरदुराना
- **ॠ**—अव्य°—-—-—भर्त्सना, निन्दा
- **ॠ**—अव्य°—-—-—करुणा तथा
- **ॠ**—अव्य°—-—-—स्मृति का व्यंजक विस्मयादि द्योतक अव्यय
- **ॠः**—पुं°—-—-—भैरव
- **ॠः**—पुं°—-—-—एक राक्षस
- **ॠ**—क्र्या° पर° <ऋणाति>,<ईर्ण>—-—-—जाना, हिलना-डुलना
- **एः**—पुं°—-—इ-विच्—विष्णु
- **एः**—अव्यय—-—-—स्मरण
- **एः**—अव्यय—-—-—ईर्ष्या
- **एः**—अव्यय—-—-—करुणा
- **एः**—अव्यय—-—-—आमन्त्रण

- **एः**—अव्यय—-——घृणा तथा निन्दा व्यंजक अव्यय
- **एक**—सर्व° वि°—-—इ-कन्—एक , अकेला, एकाकी, केवल मात्र
- **एक**—सर्व° वि°—-—इ-कन्—जिसके साथ् कोई और न हो
- **एक**—सर्व° वि°—-—इ-कन्—वही बिल्कुल वही, समरूप
- **एक**—सर्व° वि°—-—इ-कन्—स्थिर, अपरिवर्तित
- **एक**—सर्व° वि°—-—इ-कन्—अपनी प्रकार का अकेला, अद्वितीय, एक वचन
- **एक**—सर्व° वि°—-—इ-कन्—मुख्य, सर्वोपरि, प्रमुख, अनन्य
- **एक**—सर्व° वि°—-—इ-कन्—अनुपम, बेजोड़
- **एक**—सर्व° वि°—-—इ-कन्—दो या बहुत में से एक
- **एक**—सर्व° वि°—-—इ-कन्—बहुधा अंग्रेजी के अनिश्चयवाचक निपात की भांति प्रयुक्त, एक, दूसरा; 'कुछ' अर्थ को प्रकट करने के लिए बहुवचनान्त प्रयोग; अन्ये, अपरे इसके सहसम्बन्धी शब्द हैं
- **एकाक्ष**—वि°—एक-अक्ष—-—एक धुरी वाला
- **एकाक्ष**—वि°—एक-अक्ष—-—एक आँख वाला
- **एकाक्षः**—पुं°—एक-अक्षः—-—कौआ
- **एकाक्षः**—पुं°—एक-अक्षः—-—शिव
- **एकाक्षर**—वि°—एक-अक्षर—-—एक अक्षर वाला
- **एकाक्षरम्**—नपुं°—एक-अक्षरम्—-—एक अक्षर वाला,पावन अक्षर 'ओम्'
- **एकाग्र**—वि°—एक-अग्र—-—केवल एक पदार्थ या बिन्दु पर स्थिर
- **एकाग्र**—वि°—एक-अग्र—-—एक ही ओर ध्यान में मग्न, एकाग्रचित्त, तुला हुआ
- **एकाग्र**—वि°—एक-अग्र—-—अव्यग्र, अचंचल
- **एकाग्र्य**—वि°—एक-अग्र्य—-—एकाग्र
- **एकाग्र्यम्**—नपुं°—एक-अग्र्यम्—-—एकाग्रता
- **एकाङ्गः**—पुं°—एक-अङ्गः—-—शरीर रक्षक
- **एकाङ्गः**—पुं°—एक-अङ्गः—-—मंगल ग्रह या बुद्ध ग्रह
- **एकानुदिष्टम्**—नपुं°—एक-अनुदिष्टम्—-—अन्त्येष्टि संस्कार जो केवल एक ही पूर्वज को उद्देश्य करके किया गया हो
- **एकान्त**—वि°—एक-अन्त—-—अकेला
- **एकान्त**—वि°—एक-अन्त—-—एक ओर, पार्श्व में

- **एकान्त**—वि०—एक-अन्त——–जो केवल एक ही पदार्थ या बिन्दु की ओर निर्दिष्ट हो
- **एकान्त**—वि०—एक-अन्त——–अत्यधिक, बहुत
- **एकान्त**—वि०—एक-अन्त——–निरपेक्ष, अचल, सतत
- **एकान्तः**—पुं०—एक-अन्तः——–एकमात्र आश्रय, निश्चित नियम
- **एकान्तम्**—अव्य०—एक-अन्तम्——–केवल मात्र, अवश्य, सदैव, नितांत
- **एकान्तम्**—अव्य०—एक-अन्तम्——–अत्यन्त, बिल्कुल, सर्वथा
- **एकान्तेन**—अव्य०—एक-अन्तेन——–केवल मात्र, अवश्य, सदैव, नितांत
- **एकान्तेन**—अव्य०—एक-अन्तेन——–अत्यन्त, बिल्कुल, सर्वथा
- **एकान्ततः**—अव्य०—एक-अन्ततः——–केवल मात्र, अवश्य, सदैव, नितांत
- **एकान्ततः**—अव्य०—एक-अन्ततः——–अत्यन्त, बिल्कुल, सर्वथा
- **एकान्तते**—अव्य०—एक-अन्ते——–केवल मात्र, अवश्य, सदैव, नितांत
- **एकान्तते**—अव्य०—एक-अन्ते——–अत्यन्त, बिल्कुल, सर्वथा
- **एकान्तरे**—वि०—एक-अन्तर——–अगला, जिसमें केवल एक का ही अन्तर रहे, एक के बाद एक को छोड़ कर
- **एकान्तिक**—वि०—एक-अन्तिक——–अन्तिम निर्णायक
- **एकायन**—वि०—एक-अयन——–जहाँ से केवल एक ही जा सके
- **एकायन**—वि०—एक-अयन——–नितान्त ध्यानमग्न, तुला हुआ
- **एकायनम्**—नपुं०—एक-अयनम्——–एकान्त स्थल या विश्राम स्थली
- **एकायनम्**—नपुं०—एक-अयनम्——–मिलने का स्थान, संकेत-स्थल
- **एकायनम्**—नपुं०—एक-अयनम्——–अद्वैतवाद्
- **एकायनम्**—नपुं०—एक-अयनम्——–केवलमात्र उद्देश्य
- **एकार्थः**—पुं०—एक-अर्थः——–वही वस्तु, वही पदार्थ या वही आशय
- **एकार्थः**—पुं०—एक-अर्थः——–वही भाव
- **एकाहः**—पुं०—एक-अहन्——–एक दिन का समय
- **एकाहः**—पुं०—एक-अहन्——–एक दिन तक चलने वाला यज्ञ
- **एकातपत्र**—वि०—एक-आतपत्र——–एकच्छत्र से विशिष्टीकृत
- **एकादेशः**—पुं०—एक-आदेशः——–दो या दो से अधिक अक्षरों का एक स्थानापन्न

- **एकावलिः**—स्त्री°—एक-आवलिः—-—मोतियों की या अन्य मनकों की एक लड़, ऐसी उक्तियों की पंक्ति कर्त्ता का विधेय और विधेय का कर्त्ता के रूप में नियमित संक्रमण पाया जाय
- **एकावली**—स्त्री°—एक-आवली—-—मोतियों की या अन्य मनकों की एक लड़, ऐसी उक्तियों की पंक्ति कर्त्ता का विधेय और विधेय का कर्त्ता के रूप में नियमित संक्रमण पाया जाय
- **एकोदकः**—पुं°—एक-उदकः—-—जो एक ही मृत पूर्वज से जल के तर्पण द्वारा संबंद्ध हो
- **एकोदरः**—पुं°—एक-उदरः—-—सगा भाई
- **एकोदरा**—स्त्री°—एक-उदरा—-—सगी बहन
- **एकोदिष्टम्**—नपुं°—एक-उद्दिष्टम्—-—श्राद्धकृत्य जो केवल एक ही मृत व्यक्ति को उद्देश्य करके किया गया हो
- **एकोन**—वि°—एक-उन—-—एक कम, एक घटाकर
- **एकैक**—वि°—एक-एक—-—एक एक करके, व्यष्टिरूप से, एक अकेला
- **एकैकम्**—अव्य°—एक-एकम्—-—एक-एक करके, व्यक्तिशः, पृथक्-पृथक्
- **एकोघः**—पुं°—एक-ओघः—-—एक सतत धारा
- **एककर**—वि°—एक-कर—-—एक ही कार्य करने वाला
- **एककर**—वि°—एक-कर—-—एक ही हाथ वाली
- **एककर**—वि°—एक-कर—-—एक किरण वाली
- **एककार्य**—वि°—एक-कार्य—-—मिलकर काम करने वाला, सहयोगी, सहकारी
- **एककार्यम्**—नपुं°—एक-कार्यम्—-—एक मात्र कार्य, वही कार्य
- **एककालः**—पुं°—एक-कालः—-—एक समय
- **एककालः**—पुं°—एक-कालः—-—उसी समय
- **एककालिक**—वि°—एक-कालिक—-—केवल एक बार होनेवाला
- **एककालिक**—वि°—एक-कालिक—-—समवयस्क, समसामयिक
- **एककालीन**—वि°—एक-कालीन—-—केवल एक बार होनेवाला
- **एककालीन**—वि°—एक-कालीन—-—समवयस्क, समसामयिक
- **एककुण्डलः**—पुं°—एक-कुण्डलः—-—कुबेर, बलभद्र, शेषनाग
- **एकगुरु**—वि°—एक-गुरु—-—एक ही गुरु वाला
- **एकगुरुक**—वि°—एक-गुरुक—-—एक ही गुरु वाला
- **एकगुरुः**—पुं°—एक-गुरुः—-—गुरुभाई

- **एकगुरुकः**—पुं°—एक-गुरुकः—–—गुरुभाई
- **एकचक्रः**—वि°—एक-चक्रः—–—एक ही पहिये वाला
- **एकचक्रः**—वि°—एक-चक्रः—–—एक ही राजा द्वारा शासित
- **एकक्रः**—पुं°—एक-क्रः—–—सूर्य का रथ
- **एकचत्वारिंशत्**—स्त्री°—एक-चत्वारिंशत्—–—इकतालिस
- **एकचर**—वि°—एक-चर—–—अकेला घूमने या रहने वाला
- **एकचर**—वि°—एक-चर—–—एक ही अनुचर रखने वाला
- **एकचर**—वि°—एक-चर—–—असहाय रहने वाला
- **एकचारिन्**—वि°—एक-चारिन्—–—अकेला
- **एकचारिणी** —स्त्री°—एक-चारिणी —–—पतिव्रता स्त्री
- **एकचित्त**—वि°—एक-चित्त—–—केवल एक ही बात को सोचने वाला
- **एकचित्तम्**—नपुं°—एक-चित्तम्—–—एक ही वस्तु पर चित्त की स्थिरता
- **एकचित्तम्**—नपुं°—एक-चित्तम्—–—ऐकमत्य, एक मत से
- **एकचेतस्**—वि°—एक-चेतस्—–—एक मत
- **एकमनस्**—वि°—एक-मनस्—–—एक मत
- **एकजन्मन्**—पुं°—एक-जन्मन्—–—राजा
- **एकजन्मन्**—पुं°—एक-जन्मन्—–—शूद्र
- **एकजात**—वि°—एक-जात—–—एक ही माता-पिता से उत्पन्न
- **एकजातिः**—स्त्री°—एक-जातिः—–—शूद्र
- **एकजातीय**—वि°—एक-जातीय—–—एक ही प्रकार का या एक ही परिवार का
- **एकज्योतिस्**—पुं°—एक-ज्योतिस्—–—शिव
- **एकतान**—वि°—एक-तान—–—केवल एक पदार्थ पर स्थिर या केन्द्रित, नितान्त ध्यानमग्न
- **एकतालः**—पुं°—एक-तालः—–—संगति, गीतों का यथार्थ समंजन, नृत्य, वाद्य यंत्र
- **एकतीर्थिन्**—वि°—एक-तीर्थिन्—–—उसी पावन जल में स्नान करनेवाला
- **एकतीर्थिन्**—वि°—एक-तीर्थिन्—–—एक ही धर्मसंघ से संबंध रखने वाला
- **एकतीर्थिन्**—पुं°—एक-तीर्थिन्—–—सहपाठी, गुरुभाई
- **एकत्रिंशत्**—स्त्री°—एक-त्रिंशत्—–—इकतीस

- **एकदंष्ट्रः**—पुं°—एक-दंष्ट्रः—–—एक दांत वाला, गणेश का विशेषण
- **एकदन्तः**—पुं°—एक-दन्तः—–—एक दांत वाला, गणेश का विशेषण
- **एकदण्डिन्**—पुं°—एक-दण्डिन्—–—सन्यासियों या भिक्षुकों का एक समुदाय
- **एकदृश**—वि°—एक-दृश—–—एक आँख वाला
- **एकदृश**—पुं°—एक-दृश—–—कौवा
- **एकदृश**—पुं°—एक-दृश—–—शिव
- **एकदृश**—पुं°—एक-दृश—–—दार्शनिक
- **एकदृष्टि**—वि°—एक-दृष्टि—–—एक आँख वाला
- **एकदृष्टि**—पुं°—एक-दृष्टि—–—कौवा
- **एकदृष्टि**—पुं°—एक-दृष्टि—–—शिव
- **एकदृष्टि**—पुं°—एक-दृष्टि—–—दार्शनिक
- **एकदेवः**—पुं°—एक-देवः—–—परब्रह्म
- **एकदेशः**—पुं°—एक-देशः—–—एक स्थान या स्थल
- **एकदेशः**—पुं°—एक-देशः—–—एक भाग या अंश
- **एकधर्मन्**—वि°—एक-धर्मन्—–—एक ही प्रकार के गुणों को रखने वाला, या एक ही प्रकार की संपत्ति को रखने वाला
- **एकधर्मन्**—वि°—एक-धर्मन्—–—एक ही धर्म को मानने वाला
- **एकधर्मिन्**—वि°—एक-धर्मिन्—–—एक ही प्रकार के गुणों को रखने वाला, या एक ही प्रकार की संपत्ति को रखने वाला
- **एकधर्मिन्**—वि°—एक-धर्मिन्—–—एक ही धर्म को मानने वाला
- **एकधुर**—वि°—एक-धुर—–—जो एक ही प्रकार कर सके
- **एकधुर**—वि°—एक-धुर—–—जो एक ही प्रकार से जुत सके
- **एकधुरावह**—वि°—एक-धुरावह—–—जो एक ही प्रकार कर सके
- **एकधुरावह**—वि°—एक-धुरावह—–—जो एक ही प्रकार से जुत सके
- **एकधुरीण**—वि°—एक-धुरीण—–—जो एक ही प्रकार कर सके
- **एकधुरीण**—वि°—एक-धुरीण—–—जो एक ही प्रकार से जुत सके
- **एकनटः**—पुं°—एकः-नटः—–—नाटक में प्रधान पात्र, सूत्रधार जो नान्दीपाठ करता है
- **एकनवतिः**—स्त्री°—एक-नवतिः—–—इक्यानवे
- **एकपक्षः**—पुं°—एक-पक्षः—–—एक पक्ष या दल

- **एकपत्नी**—स्त्री°—एक-पत्नी—-—पतिव्रता स्त्री
- **एकपत्नी**—स्त्री°—एक-पत्नी—-—सपत्नी, सोत
- **एकपदी**—स्त्री°—एक-पदी—-—पगडंडी
- **एकपदे**—अव्य°—एक-पदे—-—अकस्मात्,एकदम, अचानक
- **एकपादः**—पुं°—एक-पादः—-—एक या अकेला पैर
- **एकपादः**—पुं°—एक-पादः—-—एक या वही चरण
- **एकपादः**—पुं°—एक-पादः—-—विष्णु, शिव
- **एकपिङ्गः**—पुं°—एक-पिङ्गः—-—कुबेर
- **एकपिङ्गलः**—पुं°—एक-पिङ्गलः—-—कुबेर
- **एकपिण्ड**—वि°—एक-पिण्ड—-—अन्त्येष्ठि पिंड- दान के द्वारा संयुक्त
- **एकभार्या**—स्त्री°—एक-भार्या—-—एक पतिव्रता और सती स्त्री
- **एकभार्यः**—पुं°—एक-भार्यः—-—केवल एक पत्नी रखने वाला
- **एकभाव**—वि°—एक-भाव—-—सच्चा भक्त, ईमानदार
- **एकयष्टिः**—स्त्री°—एक-यष्टिः—-—मोतियों की एक लड़ी
- **एकयष्टिका**—स्त्री°—एक-यष्टिका—-—मोतियों की एक लड़ी
- **एकयोनि**—वि°—एक-योनि—-—सहोदर
- **एकयोनि**—वि°—एक-योनि—-—एक ही कुल या जाति के
- **एकरसः**—पुं°—एक-रसः—-—उद्देश्य या भावना की एकता
- **एकरसः**—पुं°—एक-रसः—-—केवल मात्र रस या आनन्द
- **एकराज्**—पुं°—एक-राज्—-—निरंकुश या स्वेच्छाचारी राजा
- **एकराजः**—पुं°—एक-राजः—-—निरंकुश या स्वेच्छाचारी राजा
- **एकरात्रः**—पुं°—एक-रात्रः—-—एक पूरी रात तक रहने वाला पर्व
- **एकरिक्थिन्**—पुं°—एक-रिक्थिन्—-—सह-उत्तराधिकारी
- **एकरूप**—वि°—एक-रूप—-—एक सा, समान
- **एकरूप**—वि°—एक-रूप—-—समरूप
- **एकलिङ्गः**—पुं°—एक-लिङ्गः—-—एक ही लिंग रखने वाला शब्द
- **एकलिङ्गः**—पुं°—एक-लिङ्गः—-—कुबेर

- **एकवचनम्**—नपुं°—एक-वचनम्—-—एक संख्या को प्रकट करने वाला शब्द
- **एकवर्णः**—पुं°—एक-वर्णः—-—एक जाति
- **एकवर्षिका**—स्त्री°—एक-वर्षिका—-—एक वर्ष की बछिया
- **एकवाक्यता**—स्त्री°—एक-वाक्यता—-—अर्थ की संगति, ऐकमत्य, विभिन्न उक्तियों का सामंजस्य
- **एकवारम्**—अव्य°—एक-वारम्—-—केवल एक बार
- **एकवारम्**—अव्य°—एक-वारम्—-—तुरन्त, अकस्मात्
- **एकवारम्**—अव्य°—एक-वारम्—-—एक ही समय
- **एकवारे**—अव्य°—एक-वारे—-—केवल एक बार
- **एकवारे**—अव्य°—एक-वारे—-—तुरन्त, अकस्मात्
- **एकवारे**—अव्य°—एक-वारे—-—एक ही समय
- **एकविंशतिः**—स्त्री°—एक-विंशतिः—-—इक्कीस
- **एकविलोचन**—वि°—एक-विलोचन—-—एक आँख वाला
- **एकविषयिन्**—पुं°—एक-विषयिन्—-—प्रतिद्वन्द्वी
- **एकवीरः**—पुं°—एक-वीरः—-—प्रमुख योद्धा या शूरवीर
- **एकवेणिः**—स्त्री°—एक-वेणिः—-—बालों की एक मात्र चोटी
- **एकवेणी**—स्त्री°—एक-वेणी—-—बालों की एक मात्र चोटी
- **एकशफ**—वि°—एक-शफ—-—अखंड खुर वाला
- **एकशफः**—पुं°—एक-शफः—-—ऐसा पशु जिसके खुर या सुम फटे हुए न हों
- **एकशरीर**—वि°—एक-शरीर—-—रक्तसंबद्ध एक खून का
- **एकावयवः**—पुं°—एक-अवयवः—-—एक रक्त के बन्धु - बांधव
- **एकशाखः**—पुं°—एक-शाखः—-—एक ही शाखा या विचार का ब्राह्मण
- **एकशृङ्ग**—वि°—एक-शृङ्ग—-—केवल एक सींग धारी
- **एकशृङ्गः**—पुं°—एक-शृङ्गः—-—अरण्याश्व, गेंडा
- **एकशृङ्गः**—पुं°—एक-शृङ्गः—-—विष्णु
- **एकशेषः**—पुं°—एक-शेषः—-—एकशेष' द्वन्द्व समास का एक भेद जिसमें केवल एक ही पद अवशिष्ट रहता है
- **एकश्रुत**—वि°—एक-श्रुत—-—एक ही बार सुना हुआ
- **एकधर**—वि°—एक-धर—-—एक बार सुनी हुई बात को ध्यान में रखने वाला

- **एकश्रुतिः**—स्त्री॰—एक-श्रुतिः—-—एकस्वरता
- **एकसप्ततिः**—स्त्री॰—एक-सप्ततिः—-—इकहत्तर
- **एकसर्ग**—वि॰—एक-सर्ग—-—नितान्त ध्यानमग्न
- **एकसाक्षिक**—वि॰—एक-साक्षिक—-—एक व्यक्ति द्वारा देखा हुआ
- **एकहायन**—वि॰—एक-हायन—-—एक वर्ष की आयु का
- **एकहायनी**—स्त्री॰—एक-हायनी—-—एक वर्ष की बछिया
- **एकक**—वि॰—-—एक-कन्—इकहरा, अकेला, एकाकी, बिना किसी सहयक के
- **एकक**—वि॰—-—एक-कन्—वही, समरूप
- **एकतम**—वि॰—-—एक-डतमच्—बहुतों में से एक
- **एकतम**—वि॰—-—एक-डतमच्—एक
- **एकतर**—नपुं॰—-—एक-डतरच्—दो में से कोई एक, कोई सा
- **एकतर**—नपुं॰—-—एक-डतरच्—दूसरा, भिन्न
- **एकतर**—नपुं॰—-—एक-डतरच्—बहुतों में से एक
- **एकतः**—अव्य॰—-—एक-तसिल्—एक ओर से, एक ओर
- **एकतः**—अव्य॰—-—एक-तसिल्—एक एक करके, एक एक
- **एकतोऽन्यतः**—अव्य॰—एकतः-अन्यतः—-—एक ओर, दूसरी ओर
- **एकत्र**—अव्य॰—-—एक-त्रल्—एक स्थान पर
- **एकत्र**—अव्य॰—-—एक-त्रल्—इकट्ठे, सब इकट्ठे मिलकर
- **एकदा**—अव्य॰—-—एक-दा—एक बार, एक दफा, एक समय
- **एकदा**—अव्य॰—-—एक-दा—उसी समय, सर्वथा एक बार, साथ ही साथ
- **एकधा**—अव्य॰—-—एक-धा—एक प्रकार से,
- **एकधा**—अव्य॰—-—एक-धा—अकेले
- **एकधा**—अव्य॰—-—एक-धा—तुरन्त, उसी समय
- **एकधा**—अव्य॰—-—एक-धा—मिलकर, साथ साथ
- **एकल**—वि॰—-—एक-ला-क—अकेला, एकाकी
- **एकशः**—अव्य॰—-—एक-शस्—एक एक करके, अकेले
- **एकाकिन्**—वि॰—-—एक-आकिनच्—अकेला, केवल एक

- **एकादशन्**—सं॰ वि॰—-—एकेन अधिका दश इति—ग्यारह
- **एकादश**—वि॰—-—-—ग्यारहवाँ
- **एकादशी**—स्त्री॰—-—-—चान्द्र मास के प्रत्येक पक्ष का ग्यरहवाँ दिन, विष्णु संबंधी पुनीत दिवस
- **एकादशद्वारम्**—नपुं॰—एकादश-द्वारम्—-—शरीर के ग्यारह छिद्र
- **एकादशरुद्राः**—ब॰ व॰—एकादश-रुद्राः—-—११ रुद्र
- **एकीभावः**—पुं॰—-—एक-च्वि-भू-घञ्—संहति, साहचर्य
- **एकीभावः**—पुं॰—-—एक-च्वि-भू-घञ्—सामान्य स्वभाव या गुण
- **एकीय**—वि॰—-—एक-छ—एक का या एक से
- **एकीयः**—पुं॰—-—एक-छ—तरफदार, सहकारी
- **एज्**—भ्वा॰ आ॰<एजते>, <एजित>—-—-—काँपना
- **एज्**—भ्वा॰ आ॰<एजते>, <एजित>—-—-—हिलना-डुलना
- **एज्**—भ्वा॰ आ॰<एजते>, <एजित>—-—-—चमकना
- **अपेज्**—भ्वा॰ आ॰—अप-एज्—-—दूर हाँक देना
- **उदेज्**—भ्वा॰ आ॰—उद-एज्—-—उठना, ऊपर को होना
- **एठ्**—भ्वा॰ आ॰ <एठते>,<एठितज़्>—-—-—छेदना, रोकना, विरोध करना
- **एड**—वि॰—-—इल्-अच्, डलयोरभेदः—बहरा
- **एडः**—पुं॰—-—-—एक प्रकार की भेंड़
- **एडमूक**—वि॰—एड-मूक—-—बहरा और गूगा
- **एडमूक**—वि॰—एड-मूक—-—दुष्ट, कुटिल
- **एडकः**—पुं॰—-—एड-कन्—भेड़ा, जंगली बकरा
- **एडका**—स्त्री॰—-—एड-कन्+ टाप्—भेड़ी
- **एणः**—पुं॰—-—एति द्रुतं गच्छति इति - इ-ण-एण-कन् च—एक प्रकार का काला बारासिंघा हरिण
- **एणकः**—पुं॰—-—एति द्रुतं गच्छति इति - इ-ण-एण-कन् च—एक प्रकार का काला बारासिंघा हरिण
- **एणाजिनम्**—नपुं॰—एणः-अजिनम्—-—मृगचर्म
- **एणतिलकः**—पुं॰—एणः-तिलकः—-—चन्द्रमा
- **एणभृत्**—पुं॰—एणः-भृत्—-—चन्द्रमा
- **एणाङ्कः**—पुं॰—एणः-अङ्कः—-—चन्द्रमा

- **एणलाञ्छनः**—पुं॰—एणः-लाञ्छनः—-—चन्द्रमा
- **एणदृश्**—वि॰—एणः-दृश्—-—हरिण जैसी आँखों वाला
- **एणदृश्**—वि॰—एणः-दृश्—-—हरिण जैसी आँखों वाला
- **एणी**—स्त्री॰—-—एण-ङीष्—काली हरिणी
- **एत**—वि॰—-—-—रंगबिरंगा, चमकीला
- **एतः**—पुं॰—-—-—हरिण या बारहसिंघा
- **एतद्**—सर्व॰ वि॰—-—इ-अदि, तुक्—यह, यहाँ, सामने
- **एतद्**—सर्व॰ वि॰—-—इ-अदि, तुक्—यह प्रायः अपने पूर्ववर्ती शब्द की ओर संकेत करता है, विशेषकर जबकि यह 'इदम्' या किसी और सर्वनाम के साथ संयुक्त किया जाय
- **एतद्**—सर्व॰ वि॰—-—इ-अदि, तुक्—यह संबंधबोधक वाक्यखंड में भी प्रायः प्रयुक्त होता है और उस अवस्था में - संबंधबोधक बाद में आता है
- **एतद्**—अव्य॰—-—-—इस रीति से, इस प्रकार, अतः, ध्यान दो
- **एतदनन्तरम्**—नपुं॰—एतद्-अनन्तरम्—-—इसके तुरन्त बाद
- **एतदंत**—वि॰—एतद्-अंत—-—इस प्रकार समाप्त करते हुए
- **एतद्द्वितीय**—वि॰—एतद्-द्वितीय—-—जो किसी कार्य को दोबारा करे
- **एतत्प्रथम**—वि॰—एतद्-प्रथम—-—जो किसी को पहली बार करे
- **एतदीय**—वि॰—-—एतद्-छ—इसका, के,की
- **एतनः**—पुं॰—-—आ-इ-तन—श्वास, साँस छोड़ना
- **एतर्हि**—अव्य॰—-—इदम्-र्हिल्, एत आदेशः—अब, इस समय, वर्तमान समय में
- **एतादृश्**—वि॰—-—-—ऐसा, इस प्रकार का
- **एतादृश्**—वि॰—-—-—इस प्रकार का
- **एतादृश**—वि॰—-—-—ऐसा, इस प्रकार का
- **एतादृश**—वि॰—-—-—इस प्रकार का
- **एतादृक्ष**—वि॰—-—-—ऐसा, इस प्रकार का
- **एतादृक्ष**—वि॰—-—-—इस प्रकार का
- **एतावत्**—वि॰—-—एतद्-वतुप्—इतना अधिक, इतना बड़ा, इतने अधिक, इतना विस्तृत, इतनी दूर, इस गुण का या ऐसे प्रकार का
- **एतावत्**—अव्य॰—-—-—इतनी दूर, इतना अधिक, इतने अंश में, इस प्रकार
- **एध्**—भ्वा॰ आ॰ <एधते>, <एधित>—-—-—उगना, बढ़ना

- **एध्**—भ्वा° आ° <एधते>, <एधित>—-——-—फलना-फूलना, सुख में जीवन बिताना
- **एध्**—पुं°—-——-—उगवाना, बढ़वाना, अभिवादन करना, सम्मान करना
- **एधः**—पुं°——-—इन्ध्-घञ्, नि°—इंधन
- **एधतुः**—पुं°—-——एध्-चतु—मनुष्य
- **एधतुः**—पुं°—-—एध्-चतु—अग्नि
- **एधस्**—नपुं°—-—इन्ध्-असि—इंधन
- **एधा**—स्त्री°—-—एध्-अ-टाप्—फलना-फूलना, हर्ष
- **एधित**—भू° क° कृ°—-—एध्-क्त—विकसित, बढ़ा हुआ
- **एधित**—भू° क° कृ°—-—एध्-क्त—पाला पोसा
- **एनस्**—नपुं°——इ-असुन्, नुडागमः—पाप, अपराध, दोष
- **एनस्**—नपुं°——इ-असुन्, नुडागमः—कुचेष्टा, जुर्म
- **एनस्**—नपुं°——इ-असुन्, नुडागमः—खिन्नता
- **एनस्**—नपुं°——इ-असुन्, नुडागमः—निन्दा, कलंक
- **एनस्वत्**—वि°——एनस्-मतुप्, व आदेशः, विनि वा—दुष्ट, पापी
- **एनस्विन्**—वि°—-—एनस्-मतुप्, व आदेशः, विनि वा—दुष्ट, पापी
- **एरण्डः**—पुं°——आ-ईर्-अण्डच्—अरंडी का पौधा
- **एलकः**—पुं°—-—इल्-अच्-कन्—मेढ़ा
- **एलवालु**—नपुं°—-—-—कैथ वृक्ष की सुगन्धयुक्त छाल
- **एलवालु**—नपुं°—-——एक रवेदार या दानेदार द्रव्य
- **एलवालुकम्**—नपुं°——एला-वल्-उण् ह्रस्वः कन् च—कैथ वृक्ष की सुगन्धयुक्त छाल
- **एलवालुकम्**—नपुं°——एला-वल्-उण् ह्रस्वः कन् च—एक रवेदार या दानेदार द्रव्य
- **एलविलः**—पुं°——इल्विला-अण्—कुबेर
- **एला**—स्त्री°——इल्-अच्-टाप्—इलायची का पौधा
- **एला**—स्त्री°—-—इल्-अच्-टाप्—इलायची
- **एलापर्णी**—स्त्री°—एला-पर्णी——लाजवन्ती जाति का एक पौधा
- **एलीका**—स्त्री°—-—आ-ईल्-ईकन्-टाप्—छोटी इलायची
- **एव**—अव्य°——इ-वन्—ठीक, बिल्कुल, सही तौर पर

- **एवमेव**—अव्य॰—-—इ-वन्—बिल्कुल ऐसा ही, ठीक इसी प्रकार का
- **एव**—अव्य॰—-—इ-वन्—वही, सही, समरूप
- **एव**—अव्य॰—-—इ-वन्—केवल, अकेला, मात्र,केवल मात्र सचाई, सचाई के अतिरिक्त और कुछ नहीं
- **एव**—अव्य॰—-—इ-वन्—पहले ही
- **एव**—अव्य॰—-—इ-वन्—कठिनाई से, उसी क्षण, ज्यूँही
- **एव**—अव्य॰—-—इ-वन्—की भाँति, जैसे कि
- **एव**—अव्य॰—-—इ-वन्—सामान्यतः किसी उक्ति पर बल देने के लिए, यह बात निश्चित रूप से होगी
- **एव**—अव्य॰—-—इ-वन्—अपयश
- **एव**—अव्य॰—-—इ-वन्—न्यूनता
- **एव**—अव्य॰—-—इ-वन्—आज्ञा
- **एव**—अव्य॰—-—इ-वन्—नियंत्रण
- **एव**—अव्य॰—-—इ-वन्—केवल पूर्ति के लिए
- **एवम्**—अव्य॰—-—इ-वमु—अतः, इसलिए, इस रीति से, यह इस प्रकार से है
- **एवमस्तु**—अव्य॰—-—-—ऐसा ही हो
- **यद्येवम्**—अव्य॰—-—-—यदि ऐसा है
- **यद्येवम्**—अव्य॰—-—-—बिल्कुल ऐसा ही
- **एवमवस्थ**—वि॰—एवम्-अवस्थ—-—इस प्रकार स्थित, या ऐसी परिस्थितियों में फँसा हुआ
- **एवमादि**—वि॰—एवम्-आदि—-—ऐसा और इस प्रकार का
- **एवमाद्य**—वि॰—एवम्-आद्य—-—ऐसा और इस प्रकार का
- **एवङ्कारम्**—अव्य॰—एवम्-कारम्—-—इस रीति से
- **एवङ्गुण**—वि॰—एवम्-गुण—-—ऐसे गुणों वाला
- **एवम्प्रकार**—वि॰—एवम्-प्रकार—-—इस प्रकार का
- **एवम्प्राय**—वि॰—एवम्-प्राय—-—इस प्रकार का
- **एवम्भूत**—वि॰—एवम्-भूत—-—इस प्रकार के गुणों वाला, ऐसा, इस ढंग का
- **एवंरूप**—वि॰—एवम्-रूप—-—इस प्रकार का, ऐसे रूप का
- **एवंविध**—वि॰—एवम्-विध—-—इस प्रकार का, ऐसा
- **एष्**—भ्वा॰ उभ॰ <एषति>, <एषते>, <एषित>—-—-—जाना, पहुँचना

- **एष्**—भ्वा० उभ० <एषति>, <एषते>, <एषित>—————शीघ्रता से जाना, दौड़ कर् जाना
- **पर्येषः**—पुं०—परि-एषः———ढूढ़ना
- **एषणः**—पुं०———एष्-ल्युट्—लोहे का तीर
- **एषणम्**—नपुं०———एष्-ल्युट्—ढूढ़ना
- **एषणम्**—नपुं०———एष्-ल्युट्—कामना करना
- **एषणा**—स्त्री०———एष्-ल्युट्+ टाप्—कामना, इच्छा
- **एषणिका**—स्त्री०———इष्-ल्युट्-कन्-टाप्, इत्वम्—सुनार का काँटा तोलने की तराजू
- **एषा**—स्त्री०———इष्-अ-टाप्—इच्छा, कामना
- **एषिन्**—वि०———इष्-णिनि—इच्छा करते हुए
- **ऐः**—पुं०———आ-इ-विच्—शिव
- **ऐः**—अव्य०—————बुलाने
- **ऐः**—अव्य०—————स्मरण करने
- **ऐः**—अव्य०—————आमंत्रण को प्रकट करने वाला विस्मयादि द्योतक चिह्न
- **ऐकद्यम्**—अव्य०—————तुरन्त
- **ऐकध्यम्**—नपुं०———एकधा-ध्यमुञ्—समय या घटना की ऐकान्तितता
- **ऐकपत्यम्**—नपुं०———एकपति-ष्यञ्—परम प्रभुता, सर्वोपरि शक्ति
- **ऐकपदिक**—वि०———एकपद-ठञ्—एक पद से संबंध रखने वाला
- **ऐकपद्यम्**—नपुं०———एक पद-ष्यञ्—शब्दों की एकता
- **ऐकपद्यम्**—नपुं०———एक पद-ष्यञ्—एक शब्द बनना
- **ऐकमत्यम्**—नपुं०———एकमत-ष्यञ्—एकमतता, सहमति
- **ऐकागारिकः**—पुं०———एकागार-ठक्—चोर
- **ऐकागारिकः**—पुं०———एकागार-ठक्—एक घर का मालिक
- **ऐकाग्र्यम्**—नपुं०———एकाग्र-ष्यञ्—एक ही पदार्थ पर जुट जाना, एकाग्रता
- **ऐकाङ्गः**—पुं०———ऐकाङ्ग-अण—शरीर रक्षक दल का एक सिपाही
- **ऐकात्म्यम्**—नपुं०———एकात्मन्-ष्यञ्—एकता, आत्मा की एकता
- **ऐकात्म्यम्**—नपुं०———एकात्मन्-ष्यञ्—समरूपता, समता
- **ऐकात्म्यम्**—नपुं०———एकात्मन्-ष्यञ्—परमात्मा के साथ एकता या तादात्म्य

- **ऐकाधिकरण्यम्**—नपुं॰—-—एकाधिकरण-ष्यञ्—संबंध की एकता
- **ऐकाधिकरण्यम्**—नपुं॰—-—एकाधिकरण-ष्यञ्—एक ही विषय में व्याप्ति
- **ऐकान्तिक**—वि॰—-—-—पूर्ण, समग्र, पूरा
- **ऐकान्तिक**—वि॰—-—-—विश्वस्त, निश्चित
- **ऐकान्तिक**—वि॰—-—-—अनन्य
- **ऐकान्यिकः**—पुं॰—-—एकान्य-ठक्—वह शिष्य जो वेद का सस्वर पाठ करने में एक अशुद्धि करे
- **ऐकार्थ्यम्**—नपुं॰—-—एकार्थ-ष्यञ्—उद्देश्य या प्रयोजन की समानता
- **ऐकार्थ्यम्**—नपुं॰—-—एकार्थ-ष्यञ्—अर्थों की संगति
- **ऐकाहिक**—वि॰—-—एकाह-ठक्—आह्निक
- **ऐकाहिक**—वि॰—-—एकाह-ठक्—एक दिन का, उसी दिन का, दैनिक
- **ऐक्यम्**—नपुं॰—-—एक-ष्यञ्—एकपना, एकता
- **ऐक्यम्**—नपुं॰—-—एक-ष्यञ्—एकमतता
- **ऐक्यम्**—नपुं॰—-—एक-ष्यञ्—समरूपता, समता
- **ऐक्यम्**—नपुं॰—-—एक-ष्यञ्—विशेषकर मानव आत्मा की समरूपता, या विश्व की परमात्मा से एकरूपता
- **ऐक्षव**—वि॰—-—इक्षु-अण्—गन्ने से बना या उत्पन्न
- **ऐक्षवम्**—नपुं॰—-—इक्षु-अण्—चीनी
- **ऐक्षवम्**—नपुं॰—-—इक्षु-अण्—मादक शराब
- **ऐक्षव्य**—वि॰—-—इक्षु-ण्यत्—गन्ने से बना पदार्थ
- **ऐक्षुक**—वि॰—-—इक्षु-ठञ्—गन्ने के लिए उपयुक्त
- **ऐक्षुक**—वि॰—-—इक्षु-ठञ्—गन्ने वाला
- **ऐक्षुकः**—पुं॰—-—इक्षु-ठञ्—गन्ने ले जाने वाला
- **ऐक्षुभारिकः**—वि॰—-—इक्षुभार-ठक्—गन्ने का बोझा ढोने वाला
- **ऐक्ष्वाक**—वि॰—-—इक्ष्वाकु-अ—इक्ष्वाकु से संबंध रखने वाला
- **ऐक्ष्वाकः**—पुं॰—-—इक्ष्वाकु-अ—इक्ष्वाकु की सन्तान
- **ऐक्ष्वाकः**—पुं॰—-—इक्ष्वाकु-अ—इक्ष्वाकु वंश के लोगों द्वारा शासित देश
- **ऐक्ष्वाकुः**—पुं॰—-—इक्ष्वाकु-अ—इक्ष्वाकु की सन्तान
- **ऐक्ष्वाकुः**—पुं॰—-—इक्ष्वाकु-अ—इक्ष्वाकु वंश के लोगों द्वारा शासित देश

- **ऐङ्गुद**—वि°———इङ्गुदी-अण्—इङ्गुदी वृक्ष से उत्पन्न
- **ऐङ्गुदम्**—नपुं°———इङ्गुदी-अण्—इङ्गुदी वृक्ष का फल
- **ऐच्छिक**—वि°————इच्छा पर निर्भर, इच्छापरक
- **ऐच्छिक**—वि°————मनमाना
- **ऐडक**—वि°————भेड़ का
- **ऐडविडः**—पुं°———इडविडा-अण् पक्षे डलयोरभेद्ः—कुबेर
- **ऐडलविडलः**—पुं°———इडविडा-अण् पक्षे डलयोरभेद्ः—कुबेर
- **ऐण**—वि°————बारहसिंघा हरिण की
- **ऐणेय**—वि°———एणी-ढक्—काली हरिणी या तत्संबंधी किसी पदार्थ से उत्पन्न
- **ऐणेयः**—पुं°———एणी-ढक्—काला हरिण
- **ऐणेयम्**—नपुं°———एणी-ढक्—रतिबंध, रति क्रिया का एक प्रकार
- **ऐतदात्म्यम्**—नपुं°———एतदात्मन्-ष्यञ्—इस पूअकार के गुण या विशिष्टता को रखने की अवस्था
- **ऐतरेयिन्**—पुं°———ऐतरेय-इनि—ऐतरेय ब्राह्मण का अध्येता
- **ऐतिहासिक**—वि°———इतिहास-ठक्—परम्परा प्राप्त
- **ऐतिहासिक**—वि°———इतिहास-ठक्—इतिहास संबंधी
- **ऐतिहासिकः**—पुं°———इतिहास-ठक्—इतिहासकार
- **ऐतिहासिकः**—पुं°———इतिहास-ठक्—वह व्यक्ति जो पौराणिक उपाख्यानों को जानता है या उनका अध्ययन करता है
- **ऐतिह्यम्**—नपुं°———इतिह-ष्यञ्—परम्परा प्राप्त शिक्षा, उपाख्यानात्मक वर्णन
- **ऐदम्पर्यम्**—नपुं°———इदम्पर-ञ्य—आशय, क्षेत्र, संबंध
- **ऐनसम्**—नपुं°———एनस्-अण्—पाप
- **ऐन्दव**—वि°———इन्दु-अण्—चन्द्रमा संबंधी
- **ऐन्दवः**—पुं°———इन्दु-अण्—चांद्रमास
- **ऐन्द्र**—वि°———इन्द्र-अण्—इन्द्र संबंधी या इन्द्र के लिए पवित्र
- **ऐन्द्रः**—पुं°———इन्द्र-अण्—अर्जुन और बाली
- **ऐन्द्री**—स्त्री°———इन्द्र-अण्+ ङीप्—ऋग्वेद का मन्त्र जिसमें इन्द्र को संबोधित किया गया है
- **ऐन्द्री**—स्त्री°———इन्द्र-अण्+ ङीप्—पूर्व दिशा
- **ऐन्द्री**—स्त्री°———इन्द्र-अण्+ ङीप्—मुसीबत, संकट

- **ऐन्द्री**—स्त्री°——इन्द्र-अण्+ ङीप्—दुर्गा की उपाधि
- **ऐन्द्री**—स्त्री°——इन्द्र-अण्+ ङीप्—छोटी इलायची
- **ऐन्द्रजालिक**—वि°——इन्द्रजाल-ठक्—धोखे में डालने वाला
- **ऐन्द्रजालिक**—वि°——इन्द्रजाल-ठक्—जादु-टोना विषयक
- **ऐन्द्रजालिक**—वि°——इन्द्रजाल-ठक्—मायावी, भ्रान्ति जनक
- **ऐन्द्रजालिक**—वि°——इन्द्रजाल-ठक्—जादु-टोने का जानकार
- **ऐन्द्रजालिकः**—पुं°——इन्द्रजाल-ठक्—बाजीगर
- **ऐन्द्रलुप्तिक**—वि°——इन्द्रलुप्त-ठक्—गंजरोग से पीड़ित, गंजा
- **ऐन्द्रशिरः**—पुं°——इन्द्रशिर-अण्—हाथियों की एक जाति
- **ऐन्द्रिः**—पुं°——इन्द्रस्यापत्यम् - इन्द्र-इञ्—जयन्त, अर्जुन, बानरराज वालि
- **ऐन्द्रिः**—पुं°——इन्द्रस्यापत्यम् - इन्द्र-इञ्—कौवा
- **ऐन्द्रिय**—वि°——इन्द्रिय+अण् —इन्द्रियों से संबंध रखने वाला, विषयी
- **ऐन्द्रिय**—वि°——इन्द्रिय+अण् —विद्यमान, ज्ञानेन्द्रियों के लिए प्रत्यक्ष इन्द्रियगोचर
- **ऐन्द्रियक**—वि°——इन्द्रिय+वुञ् —इन्द्रियों से संबंध रखने वाला, विषयी
- **ऐन्द्रियक**—वि°——इन्द्रिय+वुञ् —विद्यमान, ज्ञानेन्द्रियों के लिए प्रत्यक्ष इन्द्रियगोचर
- **ऐन्द्रियम्**—नपुं°——इन्द्रिय+अण् —ज्ञानेन्द्रियों का विषय
- **ऐंधन**—वि°——इन्धन-अण्—जिसमें इन्धन विद्यमान हो
- **ऐंधनः**—पुं°——इन्धन-अण्—सूर्य
- **ऐयत्यम्**—नपुं°——इयत्-ष्यञ्—परिमाण, संख्या
- **ऐरावणः**—पुं°——इरा आपः ताभिः वनति शब्दायते - इरा-वन-अच् इरावणः - ततः अन्—इन्द्र का हाथी
- **ऐरावतः**—पुं°——इरा आपः तद्वान् इरावान् समुद्रः, तस्मादुत्पन्नः अण्—इन्द्र का हाथी
- **ऐरावतः**—पुं°——इरा आपः तद्वान् इरावान् समुद्रः, तस्मादुत्पन्नः अण्—श्रेष्ठ हाथी
- **ऐरावतः**—पुं°——इरा आपः तद्वान् इरावान् समुद्रः, तस्मादुत्पन्नः अण्—पाताल निवासी नागजाति का एक मुखिया
- **ऐरावतः**—पुं°——इरा आपः तद्वान् इरावान् समुद्रः, तस्मादुत्पन्नः अण्—पूर्व दिशा का दिग्गज
- **ऐरावतः**—पुं°——इरा आपः तद्वान् इरावान् समुद्रः, तस्मादुत्पन्नः अण्—एक प्रकार का इन्द्रधनुष
- **ऐरावती**—स्त्री°——इरा आपः तद्वान् इरावान् समुद्रः, तस्मादुत्पन्नः अण्—इन्द्र की हथिनी
- **ऐरावती**—स्त्री°——इरा आपः तद्वान् इरावान् समुद्रः, तस्मादुत्पन्नः अण्—बिजली

- **ऐरावती**—स्त्री°—-—इरा आपः तद्वान् इरावान् समुद्रः, तस्मादुत्पन्नः अण्—पंजाब में बहने वाली नदी, रावी
- **ऐरेयम्**—नपुं°—-—इरायाम् अन्ने भवम् - इरा-ढक्—मदिरा
- **ऐलः**—पुं°—-—इलाया अपत्यम् - अण्—पूरूरवा
- **ऐलः**—पुं°—-—इलाया अपत्यम् - अण्—मंगल ग्रह
- **ऐलबालुकः**—पुं°—-—एलवालुक-अण्—एक सुगंध-द्रव्य
- **ऐलविलः**—पुं°—-—इलविला-अण्—कुबेर
- **ऐलविलः**—पुं°—-—इलविला-अण्—मंगल ग्रह
- **ऐलेयः**—पुं°—-—इला-ढक्—एक प्रकार का गंध-द्रव्य
- **ऐलेयः**—पुं°—-—इला-ढक्—मंगल ग्रह
- **ऐश**—वि°—-—ईश-अण्—शिव से संबंध रखने वाला
- **ऐश**—वि°—-—ईश-अण्—सर्वोपरि, राजकीय
- **ऐशान**—वि°—-—ईशान-अण्—शिव से संबंध रखने वाला
- **ऐशानी**—स्त्री°—-—ईशान-अण्+ ङीप्—उत्तरपूर्वी दिशा
- **ऐशानी**—स्त्री°—-—ईशान-अण्+ ङीप्—दुर्गादिवी
- **ऐश्वर**—वि°—-—ईश्वर-अण्—शानदार
- **ऐश्वर**—वि°—-—ईश्वर-अण्—शक्तिशाली, ताकतवर
- **ऐश्वर**—वि°—-—ईश्वर-अण्—शिव से संबंध रखने वाला
- **ऐश्वर**—वि°—-—ईश्वर-अण्—सर्वोपरि, राजकीय
- **ऐश्वर**—वि°—-—ईश्वर-अण्—दिव्य
- **ऐश्वरी**—स्त्री°—-—ईश्वर-अण्—दुर्गादिवी
- **ऐश्वर्यम्**—नपुं°—-—ईश्वर-ष्यञ्—सर्वोपरिता, प्रभुता
- **ऐश्वर्यम्**—नपुं°—-—ईश्वर-ष्यञ्—ताकत, शक्ति, आधिपत्य
- **ऐश्वर्यम्**—नपुं°—-—ईश्वर-ष्यञ्—उपनिवेश
- **ऐश्वर्यम्**—नपुं°—-—ईश्वर-ष्यञ्—विभव, धन, बड़प्पन
- **ऐश्वर्यम्**—नपुं°—-—ईश्वर-ष्यञ्—सर्वशक्तिमत्ता तथा सर्वव्यापकता की दिव्य शक्तियाँ
- **ऐषमस्**—अव्य°—-—अस्मिन् वत्सरे इति नि° साधुः—इस वर्ष में, चालू वर्ष में
- **ऐषमस्तन**—वि°—-—ऐषमस्-तनप्, त्यप् वा—चालू वर्ष से संबंध रखने वाला

- **ऐषमस्त्य**—वि॰—-—ऐषमस्-तनप्, त्यप् वा—चालू वर्ष से संबंध रखने वाला
- **ऐष्टिक**—वि॰—-—इष्टि-ठक्—यज्ञसम्बन्धी, संस्कार विषयक
- **ऐष्टिकपूर्तिक**—वि॰—ऐष्टिक-पूर्तिक—-—इष्टापूर्त से संबंध रखने वाला
- **ऐहलौकिक**—वि॰—-—इहलोक-ठञ्—इस संसार से संबंध रखने वाला, या इस लोक में घटित होने वाला, ऐहिक, दुनियावी
- **ऐहिक**—वि॰—-—-—इस लोक या स्थान से संबंध रखने वाला, सांसारिक, दुनियावी, लौकिक
- **ऐहिक**—वि॰—-—-—स्थानीय
- **ऐहिकम्**—नपुं॰—-—-—व्यवसाय
- **ओ**—पुं॰—-—उ+विच्—ब्रह्मा
- **ओ**—अव्य॰—-—-—सम्बोधनात्मक अव्यय
- **ओ**—अव्य॰—-—-—बुलावा, स्मरण करना और करुणा बोधक विस्मयादि द्योतक चिह्न
- **ओकः**—पुं॰—-—उच्-क नि॰ चस्य कः—घर
- **ओकः**—पुं॰—-—उच्-क नि॰ चस्य कः—शरण, आश्रय
- **ओकः**—पुं॰—-—उच्-क नि॰ चस्य कः—पक्षी
- **ओकः**—पुं॰—-—उच्-क नि॰ चस्य कः—शूद्र
- **ओकणः**—पुं॰—-—ओ-कण्-अच्, इन् वा—खटमल
- **ओकस्**—नपुं॰—-—उच्-असुन्—घर, आवास
- **ओकस्**—नपुं॰—-—उच्-असुन्—आश्रय, शरण
- **ओख्**—भ्वा॰ पर॰ - <ओखति>, <ओखित>—-—-—सूख जाना
- **ओख्**—भ्वा॰ पर॰ - <ओखति>, <ओखित>—-—-—योग्य होना, प्रर्याप्त होना
- **ओख्**—भ्वा॰ पर॰ - <ओखति>, <ओखित>—-—-—सजाना, सुशोभित करना
- **ओख्**—भ्वा॰ पर॰ - <ओखति>, <ओखित>—-—-—अस्वीकृत करना
- **ओख्**—भ्वा॰ पर॰ - <ओखति>, <ओखित>—-—-—रोक लगाना
- **ओघः**—पुं॰—-—उच्-घञ्, पृषो॰—जलप्लावन, नदी, धारा
- **ओघः**—पुं॰—-—उच्-घञ्, पृषो॰—जल की बाढ़
- **ओघः**—पुं॰—-—उच्-घञ्, पृषो॰—राशि, परिमाण, समुदाय
- **ओघः**—पुं॰—-—उच्-घञ्, पृषो॰—समग्र
- **ओघः**—पुं॰—-—उच्-घञ्, पृषो॰—सातत्य

- **ओघः**—पुं°———उच्-घञ्, पृषो°—परम्परा, परम्पराप्राप्त उपदेश
- **ओघः**—पुं°———उच्-घञ्, पृषो°—एक प्रमुख नृत्य
- **ओज्**—भ्वा° चुरा° उभ° <ओजति>, <ओजयति>, <ओजते>, <ओजित>—————सक्षम या योग्य होना
- **ओज**—वि°———ओज्-अच्—विषम, असम
- **ओजम्**—नपुं°———ओज्-अच्—ओजस्
- **ओजस्**—नपुं°———उब्ज्-असुन् बलोपः, गुणश्च—शारीरिक सामर्थ्य, बल, शक्ति
- **ओजस्**—नपुं°———उब्ज्-असुन् बलोपः, गुणश्च—वीर्य, जननात्मक शक्ति
- **ओजस्**—नपुं°———उब्ज्-असुन् बलोपः, गुणश्च—आभा, प्रकाश
- **ओजस्**—नपुं°———उब्ज्-असुन् बलोपः, गुणश्च—शैली का विस्तृत रूप, समास की बहुलता
- **ओजस्**—नपुं°———उब्ज्-असुन् बलोपः, गुणश्च—पानी
- **ओजस्**—नपुं°———उब्ज्-असुन् बलोपः, गुणश्च—धातु की चमक
- **ओजसीन्**—वि°———ओजस्-ख, यत् वा—मजबूत, शक्तिशाली
- **ओजस्य**—वि°———ओजस्-ख, यत् वा—मजबूत, शक्तिशाली
- **ओजस्वत्**—वि°———ओजस्-मतुप्—मजबूत, वीर्यवान्, तेजस्वी, शक्तिशाली
- **ओजस्विन्**—वि°———ओजस्+विनि —मजबूत, वीर्यवान्, तेजस्वी, शक्तिशाली
- **ओड्रः**—पुं°—————एक देश का तथा उसके निवासियों का नाम
- **ओड्रम्**—नपुं°—————जवाकुसुम
- **ओत**—वि°———आ-वे-क्त—बुना हुआ, धागे से एक सिरे से दूसरे तक सिला हुआ
- **ओतप्रोत**—वि°—ओत-प्रोत———लम्बाई और चौड़ाई के बल आर-पार सिला हुआ
- **ओतप्रोत**—वि°—ओत-प्रोत———सब दिशाओं में फैला हुआ
- **ओतुः**—पुं°———अव-तुन्, ऊठ्, गुणः—बिलाव, बिल्ली
- **ओदनः**—पुं°———उन्द्-युच्—भोजन, भात
- **ओदनः**—पुं°———उन्द्-युच्—दलिया बनाकर दूध में पकाया हुआ अन्न
- **ओम्**—अव्य°———अव्-मन्, ऊठ्, गुण—पावन अक्षर 'ओम्' वेद-पाठ के आरम्भ और समाप्ति पर किया गया पावन उच्चारण, या मंत्र के आरम्भ में बोला जाने वाला
- **ओम्**—अव्य°———अव्-मन्, ऊठ्, गुण—औपचारिक पुष्टिकरण तथा सम्माननीय स्वीकृति
- **ओम्**—अव्य°———अव्-मन्, ऊठ्, गुण—स्वीकृति, अंगीकरण

- **ओम्**—अव्य०—-—अव्-मन्, ऊठ्, गुण—आदेश
- **ओम्**—अव्य०—-—अव्-मन्, ऊठ्, गुण—मांगलिकता
- **ओम्**—अव्य०—-—अव्-मन्, ऊठ्, गुण—दूर करना या रोक लगाना की भावना को प्रकट करने वाला अव्यय
- **ओम्**—अव्य०—-—अव्-मन्, ऊठ्, गुण—ब्रह्म
- **ओङ्कारः**—पुं०—ओम्-कारः—-—पवित्र ध्वनि ॐ
- **ओङ्कारः**—पुं०—ओम्-कारः—-—पवित्र उद्गार ॐ
- **ओरम्फः**—पुं०—-—-—गहरी खरोंच
- **ओल**—वि०—-—आ-उन्द्-क पृषो०—आर्द्र, गीला
- **ओलण्ड्**—भ्वा० पर०, चुरा० उभ० <ओलंडति>, <ओलंडयति>, <ओलंडित>—-—-—ऊपर की ओर फेंकना, ऊपर उछालना
- **ओल्ल**—वि०—-—ओल - पृषो०—आर्द्र, गीला
- **ओल्लः**—पुं०—-—-—प्रतिभू
- **ओल्लागतः**—पुं०—ओल्ल-आगतः—-—प्रतिभू या जामिन के रूप में आया हुआ
- **ओषः**—पुं०—-—उष्-घञ्—जलन, संवाह
- **ओषणः**—पुं०—-—उष्-ल्युट्—तिक्तता, तीक्ष्णता, तीखा रस
- **ओषधिः**—पुं०—-—ओष-धा-कि, स्त्रियां ड़ीष् —जड़ीबूटी, वनस्पति
- **ओषधिः**—पुं०—-—ओष-धा-कि, स्त्रियां ड़ीष् —औषधि का पौधा, ओषधि
- **ओषधिः**—पुं०—-—ओष-धा-कि—फसली पौधा या जड़ीबूटी जो कि पक कर सूख जाती है
- **ओषधी**—स्त्री०—-—ओष-धा-कि+ड़ीष् —जड़ीबूटी, वनस्पति
- **ओषधी**—स्त्री०—-—ओष-धा-कि+ड़ीष् —औषधि का पौधा, ओषधि
- **ओषधी**—स्त्री०—-—ओष-धा-कि+ड़ीष् —फसली पौधा या जड़ीबूटी जो कि पक कर सूख जाती है
- **ओषधीशः** —पुं०—ओषधिः-ईशः—-—चन्द्रमा
- **ओषधिगर्भः**—पुं०—ओषधिः-गर्भः—-—चन्द्रमा
- **ओषधिनाथः**—पुं०—ओषधिः-नाथः—-—चन्द्रमा
- **ओषधिज**—वि०—ओषधिः-ज—-—वनस्पति से उत्पन्न
- **ओषधिधरः**—पुं०—ओषधिः-धरः—-—ओषधि-विक्रेता
- **ओषधिधरः**—पुं०—ओषधिः-धरः—-—वैद्य
- **ओषधिधरः**—पुं०—ओषधिः-धरः—-—चन्द्रमा

- **ओषधिपतिः**—पुं°—ओषधिः-पतिः—-—ओषधि-विक्रेता
- **ओषधिपतिः**—पुं°—ओषधिः-पतिः—-—वैद्य
- **ओषधिपतिः**—पुं°—ओषधिः-पतिः—-—चन्द्रमा
- **ओषधिप्रस्थः**—पुं°—ओषधिः-प्रस्थः—-—हिमालय की राजधानी
- **ओष्ठः**—पुं°—-—उष्-थन्—होठ
- **ओष्ठाधरौ**—पुं°—ओष्ठ-अधरौ—-—ऊपर और नीचे का होठ
- **ओष्ठाधरम्**—वि°—ओष्ठ-अधरम्—-—ऊपर और नीचे का होठ
- **ओष्ठज**—वि°—ओष्ठ-ज—-—ओष्ठस्थानीय
- **ओष्ठजाहः**—पुं°—ओष्ठ-जाहः—-—होठ की जड़
- **ओष्ठपल्लवः**—पुं°—ओष्ठ-पल्लवः—-—किसलय जैसा, कोमल ओष्ठ
- **ओष्ठपल्लवम्**—नपुं°—ओष्ठ-पल्लवम्—-—किसलय जैसा, कोमल ओष्ठ
- **ओष्ठपुटम्**—नपुं°—ओष्ठ-पुटम्—-—होठों को खोलने पर बना हुआ गड्ढा
- **ओष्ठ्य**—वि°—-—ओष्ठ-यत्—होठों पर रहने वाला
- **ओष्ठ्य**—वि°—-—ओष्ठ-यत्—ओष्ठ- स्थानीय
- **ओष्ण**—वि°—-—ईषद् उष्णः - ग° स°—थोड़ा गरम, गुनगुना
- **औ**—अव्य°—-—आ-अव्-क्विप्, ऊठ—आमंत्रण
- **औ**—अव्य°—-—आ-अव्-क्विप्, ऊठ—संबोधन
- **औ**—अव्य°—-—आ-अव्-क्विप्, ऊठ—विरोध
- **औ**—अव्य°—-—आ-अव्-क्विप्, ऊठ—शपथोक्ति अथवा संकल्पद्योतक अव्यय
- **औक्थिक्यम्**—नपुं°—-—उक्थ-ठक्-ष्यञ्—उक्थ का पाठ
- **औक्थम्**—नपुं°—-—उक्थ-अण्—पाठ करने की विशेष रीति
- **औक्षकम्**—नपुं°—-—उक्ष्णां समूह इत्यर्थे उक्षन्-अण्, तिलोपः वुञ् वा—बैलों का झुण्ड
- **औक्षम्**—नपुं°—-—उक्ष्णां समूह इत्यर्थे उक्षन्-अण्, तिलोपः वुञ् वा—बैलों का झुण्ड
- **औग्र्यम्**—नपुं°—-—उग्र-ष्यञ्—दृढ़ता, भीषणता, भयंकरता, क्रूरता आदि
- **औघः**—पुं°—-—ओघ-अण्—बाढ़, जलप्लावन
- **औचित्यम्**—नपुं°—-—उचित-ष्यञ्—उपयुक्तता, योग्यता, उचितपना
- **औचित्यम्**—नपुं°—-—उचित-ष्यञ्—संगति या योग्यता, वाक्य में शब्द के यथार्थ अर्थ का निर्धारण करने के लिए कल्पित परिस्थितियों में से एक

- **औचिती**—स्त्री°—-—उचित-ष्यञ्, स्त्रियां ङीष्, यलोपश्च—उपयुक्तता, योग्यता, उचितपना
- **औचिती**—स्त्री°—-—उचित-ष्यञ्, स्त्रियां ङीष्, यलोपश्च—संगति या योग्यता, वाक्य में शब्द के यथार्थ अर्थ का निर्धारण करने के लिए कल्पित परिस्थितियों में से एक
- **औच्चैःश्रवसः**—पुं°—-—उच्चैः श्रवस्-अण्—इन्द्र का घोड़ा
- **औजसिक**—वि°—-—ओजस्-ठक्—ऊर्जस्वी, बलवान
- **औजसिकः**—पुं°—-—ओजस्-ठक्—नायक शूरवीर
- **औजस्य**—वि°—-—ओजस्-ष्यञ्—बल और स्फूर्ति का संचारक
- **औजस्यम्**—नपुं°—-—ओजस्-ष्यञ्—सामर्थ्य, जीवनशक्ति, ऊर्जा, स्फूर्ति
- **औज्ज्वल्यम्**—नपुं°—-—उज्ज्वल-ष्यञ्—उज्ज्वलता, कान्ति
- **औडुपिक**—वि°—-—उडुप-ठक्—किश्ती में बैठकर पार करने वाला
- **औडुपिकः**—पुं°—-—उडुप-ठक्—किश्ती या लट्ठे का यात्री
- **औडुम्बर**—वि°—-—उदुम्बर-अञ्—गूलर के वृक्ष से या उससे प्राप्त,
- **औडुम्बरः**—पुं°—-—उदुम्बर-अञ्—ऐसा प्रदेश जहां गूलर के वृक्ष बहुतायत से हों
- **औडुम्बरी**—स्त्री°—-—उदुम्बर-अञ्—गूलर की शाखा
- **औडुम्बरम्**—नपुं°—-—उदुम्बर-अञ्—गूलर की लकड़ी
- **औडुम्बरम्**—नपुं°—-—उदुम्बर-अञ्—गूलर का फल
- **औडुम्बरम्**—नपुं°—-—उदुम्बर-अञ्—तांबा
- **औड्रः**—पुं°—-—ओड्र-अण्—ओड्र देश का निवासी या राजा
- **औत्कण्ठ्यम्**—नपुं°—-—उत्कण्ठा-ष्यञ्—इच्छा, लालसा
- **औत्कण्ठ्यम्**—नपुं°—-—उत्कण्ठा-ष्यञ्—चिन्ता
- **औत्कर्ष्यम्**—नपुं°—-—उत्कर्ष-ष्यञ्—श्रेष्ठता, उत्कृष्टता
- **औत्तमिः**—पुं°—-—उत्तम-इञ्—१४ मनुओं में से तीसरा
- **औत्तरः**—वि°—-—-—उत्तरी
- **औत्तरेयः**—पुं°—-—उत्तरा-ढक्—अभिमन्यु और उत्तरा का पुत्र परीक्षित
- **औत्तानपादः**—पुं°—-—उत्तानपाद-अण्, इञ् वा—ध्रुव
- **औत्तानपादः**—पुं°—-—उत्तानपाद-अण्, इञ् वा—उत्तर दिशा में वर्त्तमान तारा
- **औत्पत्तिक**—वि°—-—उत्पत्ति-ठक्—अन्तर्जात, सहज

- **औत्पत्तिक**—वि०—-—उत्पत्ति-ठक्—एक ही समय पर उत्पन्न
- **औत्पात**—वि०—-—उत्पात-अण्—अपशकुनों का विश्लेषक
- **औत्पातिक**—वि०—-—उत्पात-ठक्—अमंगलकारी, अलौकिक, संकटमय
- **औत्पातिकम्**—नपुं०—-—उत्पात-ठक्—अपशकुन या अमंगल
- **औत्सङ्गिक**—वि०—-—उत्संग-ठक्—कूल्हे पर रखा हुआ, या कूल्हे पर धारण किया हुआ
- **औत्सर्गिक**—वि०—-—उत्सर्ग-ठञ्—सामान्य विधि जो अपवाद रूप में ही त्यागने योग्य हो
- **औत्सर्गिक**—वि०—-—उत्सर्ग-ठञ्—सामान्य, प्रतिबन्धरहित, सहज
- **औत्सर्गिक**—वि०—-—उत्सर्ग-ठञ्—व्युत्पन्न, यौगिक
- **औत्सुक्यम्**—नपुं०—-—उत्सुक-ष्यञ्—चिन्ता, बेचैनी
- **औत्सुक्यम्**—नपुं०—-—उत्सुक-ष्यञ्—प्रबल इच्छा, उत्सुकता, उत्साह
- **औदक**—वि०—-—उदक-अण्—जलीय, पनीला, जल से संबंध रखने वाला
- **औदञ्चन**—वि०—-—उदञ्चन-अण्—डोल या घड़े में रखा हुआ
- **औदनिकः**—पुं०—-—ओदन-ठञ्—रसोइया
- **औदरिक**—वि०—-—उदर-ठक्—बहुभोजी, पेटू, खाऊ
- **औदर्य**—वि०—-—उदरे भवः यत्—गर्भस्थित
- **औदर्य**—वि०—-—उदरे भवः यत्—गर्भान्तः-प्रविष्ट
- **औदश्वितम्**—नपुं०—-—उदश्वित्-अण्—आधा पानी मिलाकर तैयार किया हुआ मट्ठा।
- **औदार्यम्**—नपुं०—-—उदार-ष्यञ्—उदारता, कुलीनता, महत्ता
- **औदार्यम्**—नपुं०—-—उदार-ष्यञ्—बड़प्पन, श्रेष्ठता
- **औदार्यम्**—नपुं०—-—उदार-ष्यञ्—अर्थगांभीर्य
- **औदासीन्यम्**—नपुं०—-—उदासीन-ष्यञ्—उपेक्षा,निःस्पृहता
- **औदासीन्यम्**—नपुं०—-—उदासीन-ष्यञ्—एकान्तिकता, अकेलापन
- **औदासीन्यम्**—नपुं०—-—उदासीन-ष्यञ्—पूर्ण विराग, वैराग्य
- **औदास्यम्**—नपुं०—-—उदास-ष्यञ्—उपेक्षा,निःस्पृहता
- **औदास्यम्**—नपुं०—-—उदास-ष्यञ्—एकान्तिकता, अकेलापन
- **औदास्यम्**—नपुं०—-—उदास-ष्यञ्—पूर्ण विराग, वैराग्य
- **औदुम्बर**—वि०—-—उदुम्बर-अञ्—गूलर के वृक्ष से या उससे प्राप्त,

- **औदुम्बरः**—पुं॰—-—उदुम्बर-अञ्—ऐसा प्रदेश जहां गूलर के वृक्ष बहुतायत से हों
- **औदुम्बरी**—स्त्री॰—-—उदुम्बर-अञ्—गूलर की शाखा
- **औदुम्बरम्**—नपुं॰—-—उदुम्बर-अञ्—गूलर की लकड़ी
- **औदुम्बरम्**—नपुं॰—-—उदुम्बर-अञ्—गूलर का फल
- **औदुम्बरम्**—नपुं॰—-—उदुम्बर-अञ्—तांबा
- **औद्गात्रम्**—नपुं॰—-—उद्गातृ-अञ्—उद्गाता ऋत्विज का पद या कार्य ।
- **औद्दालकम्**—नपुं॰—-—उद्दाल-अण्, संज्ञायां कन्—मधु जैसा एक पदार्थ जो तीखा और कड़वा होता है।
- **औद्देशिक**—वि॰—-—उद्देश-ठक्—प्रकट करने वाला ,निर्देशक, संकेतक।
- **औद्धत्यम्**—नपुं॰—-—उद्धत-ष्यञ्—हेकड़ी, ढीठपना
- **औद्धत्यम्**—नपुं॰—-—उद्धत-ष्यञ्—साहसिकता, जीवटवाले कार्यों मे हिम्मत
- **औद्धारिक**—वि॰—-—उद्धार-ठञ्—पैतृक सम्पत्ति में से घटाया हुआ, विभक्त करने योग्य, दाययोग्य
- **औद्धारिकम्**—नपुं॰—-—उद्धार-ठञ्—एक अंश या दायभाग।
- **औद्भिदम्**—नपुं॰—-—उद्भिद्-अण्—झरने का पानी
- **औद्भिदम्**—नपुं॰—-—उद्भिद्-अण्—सेंधा नमक
- **औद्वाहिक**—वि॰—-—उद्वाह-ठञ्—विवाह से संबंध रखने वाला
- **औद्वाहिक**—वि॰—-—उद्वाह-ठञ्—विवाह में प्राप्त
- **औद्वाहिकम्**—नपुं॰—-—उद्वाह-ठञ्—विवाह के अवसर पर वधू को दिये गये उपहार, स्त्रीधन।
- **औधस्यम्**—नपुं॰—-—ऊधस्-ष्यञ्—दूध
- **औन्नत्यम्**—वि॰—-—उन्नत-ष्यञ्—ऊँचाई, ऊँचा उठना
- **औपकर्णिक**—वि॰—-—उपकर्ण-ठक्—कान के निकट रहने वाला ।
- **औपकार्यम्**—नपुं॰—-—उपकार्य-अण्, स्त्रियां टाप् च—आवास, तम्बू।
- **औपकार्या**—स्त्री॰—-—उपकार्य-अण्, स्त्रियां टाप् च—आवास, तम्बू।
- **औपग्रस्तिकः**—पुं॰—-—उपग्रस्त-ठञ्—ग्रहण
- **औपग्रस्तिकः**—पुं॰—-—उपग्रस्त-ठञ्—ग्रहण-ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा।
- **औपग्रहिकः**—पुं॰—-—उपग्रह-ठञ्—ग्रहण
- **औपग्रहिकः**—पुं॰—-—उपग्रह-ठञ्—ग्रहण-ग्रस्त सूर्य या चन्द्रमा।
- **औपचारिक**—वि॰—-—उपचार-ठक्—लाक्षणिक, आलंकारिक, गौण

- **औपचारिकम्**—नपुं॰—-—उपचार-ठक्—आलंकारिक प्रयोग।
- **औपजानुक**—वि॰—-—उपजानु-ठक्—घुटनों के पास होने वाला।
- **औपदेशिक**—वि॰—-—उपदेश-ठक्—अध्यापन या उपदेश द्वारा जीविका कमाने वाला
- **औपदेशिक**—वि॰—-—उपदेश-ठक्—शिक्षण द्वारा प्राप्त
- **औपधर्म्यम्**—वि॰—-—उपधर्म-ष्यञ्—मिथ्या सिद्धान्त, धर्मद्रोह
- **औपधर्म्यम्**—वि॰—-—उपधर्म-ष्यञ्—घटिया गुण या गुण का अपकृष्ट नियम ।
- **औपधिक**—वि॰—-—उपाधि-ठञ्—धूर्त, धोखेबाज।
- **औपधेयम्**—नपुं॰—-—उपाधि-ढञ्—रथ क पहिया, रथांग।
- **औपनायनिक**—वि॰—-—उपनयन-ठक्—उपनयन संबंधी, या उपनयन के काम का
- **औपनिधिक**—वि॰—-—उपनिधि-ठक्—धरोहर से संबंध रखने वाला
- **औपनिधिकम्**—नपुं॰—-—उपनिधि-ठक्—धरोहर या अमानत जो वस्तु धरोहर या अमानत के रूप में रखी जाय
- **औपनिषद**—वि॰—-—उपनिषद्-अण्—उपनिषदों में बताया हुआ या सिखाया हुआ, वेद विहित, आध्यात्मिक
- **औपनिषद**—वि॰—-—उपनिषद्-अण्—उपनिषदों पर आधारित, स्थापित या उपनिषदों से गृहीत
- **औपनिषदः**—पुं॰—-—उपनिषद्-अण्—परमात्मा, ब्रह्म
- **औपनिषदः**—पुं॰—-—उपनिषद्-अण्—उपनिषदों के सिद्धान्तों का अनुयायी
- **औपनीविक**—वि॰—-—उपनीवि-ठक्—स्त्री या पुरुषों की धोती की गाँठ या नाड़े के निकट रखा हुआ
- **औपपत्तिक**—वि॰—-—उपपत्ति-ठक्—तैयार, निकट
- **औपपत्तिक**—वि॰—-—उपपत्ति-ठक्—योग्य, समुचित
- **औपपत्तिक**—वि॰—-—उपपत्ति-ठक्—प्राक्काल्पनिक
- **औपमिक**—वि॰—-—उपमा-ठक्—तुलना या उपमान का काम देने वाला
- **औपमिक**—वि॰—-—उपमा-ठक्—उपमा द्वारा प्रदर्शित
- **औपम्यम्**—नपुं॰—-—उपमा-ष्यञ्—तुलना, समरूपता, सादृश्य
- **औपयिक**—वि॰—-—उपाय-ठक्—समुचित, योग्य, यथार्थ
- **औपयिक**—वि॰—-—उपाय-ठक्—प्रयत्नों द्वारा प्राप्त
- **औपयिकः**—पुं॰—-—उपाय-ठक्—उपाय, तरकीब, युक्ति
- **औपयिकम्**—नपुं॰—-—उपाय-ठक्—उपाय, तरकीब, युक्ति
- **औपरिष्ट**—वि॰—-—उपरिष्ट-अण्—ऊपर होने वाला, ऊपर का

- **औपरोधिक**—वि॰—-—उपरोध-ठक्—अनुग्रह संबंधी, कृपा संबंधी, अनुग्रह या कृपा के फलस्वरूप
- **औपरोधिक**—वि॰—-—उपरोध-ठक्—विरोध करने वाला, बाधा डालने वाला
- **औपरौधिक**—वि॰—-—उपरोध-ठक्—अनुग्रह संबंधी, कृपा संबंधी, अनुग्रह या कृपा के फलस्वरूप
- **औपरौधिक**—वि॰—-—उपरोध-ठक्—विरोध करने वाला, बाधा डालने वाला
- **औपरोधिकः**—पुं॰—-—उपरोध-ठक्—पीलू वृक्ष की लकड़ी का डंडा
- **औपल**—वि॰—-—उपल-अण्—प्रस्तरमय, पत्थर का
- **औपवस्तम्**—नपुं॰—-—उपवस्त-अण्—उपवास रखना, उपवास
- **औपवस्त्रम्**—नपुं॰—-—उपवस्त्र-अण्—उपवास के उपयुक्तभोजन, फलाहार
- **औपवस्त्रम्**—नपुं॰—-—उपवस्त्र-अण्—उपवास करना
- **औपवास्यम्**—नपुं॰—-—उपवास-ष्यञ्—उपवास रखना
- **औपवाह्य**—वि॰—-—उपवाह्य-अण्—सवारी के काम आने वाला
- **औपवाह्यः**—पुं॰—-—उपवाह्य-अण्—राजा का हाथी
- **औपवाह्यः**—पुं॰—-—उपवाह्य-अण्—कोई राजकीय सवारी
- **औपवेशिक**—वि॰—-—उपवेश-ठञ्—पूरी लगन के साथ काम करके अपनी आजीविका कमाने वाला
- **औपसंख्यानिक**—वि॰—-—उपसङ्ख्यान-ठक्—जिसका परिशिष्ट में वर्णन किया गया हो
- **औपसंख्यानिक**—वि॰—-—उपसङ्ख्यान-ठक्—परिशिष्ट
- **औपसर्गिक**—वि॰—-—उपसर्ग-ठञ्—विपत्ति का सामना करने योग्य
- **औपसर्गिक**—वि॰—-—उपसर्ग-ठञ्—अमंगलसूचक
- **औपस्थिक**—वि॰—-—उपस्थ-ठक्—व्यभिचार द्वारा अपनी जीविका चलाने वाला
- **औपस्थ्यम्**—नपुं॰—-—उपस्थ-ष्यञ्—सहवास, स्त्रीसंभोग
- **औपहारिक**—वि॰—-—उपहार-ठक्—उपहार या आहुति के काम आने वाला
- **औपहारिकम्**—वि॰—-—उपहार-ठक्—उपहार या आहुति
- **औपाधिक**—वि॰—-—उपाधि-ठञ्—विशेष परिस्थितियों में होने वाला
- **औपाधिक**—वि॰—-—उपाधि-ठञ्—उपाधि या विशेष गुणों से संबंध रखने वाला ,फलित कार्य
- **औपाध्यायक**—वि॰—-—उपाध्याय-वुञ्—अध्यापक से प्राप्त से प्राप्त या आने वाला
- **औपासन**—वि॰—-—उपासन-अण्—गृह्याग्नि से संबंध रखने वाला
- **औपासनः**—पुं॰—-—उपासन-अण्—गार्ह्यस्थ्य पूजा के लिये प्रयुक्त अग्नि, गृह्याग्नि

- **औम्**—अव्य०———–—शूद्रों के लिये पावन ध्वनि
- **औरभ्र**—वि०——–उरभ्र-अण्—भेंड़ से संबंध रखने वाला, या भेड़ से उत्पन्न
- **औरभ्रम्**—नपुं०—–—उरभ्र-अण्—भेंड़ या बकरे का माँस
- **औरभ्रम्**—नपुं०—–—उरभ्र-अण्—ऊनी वस्त्र, मोटा ऊनी कम्बल
- **औरभ्रकम्**—नपुं०—–—उरभ्राणां समूहः - वुञ्—भेड़ों का झुण्ड
- **ओरभ्रिकः**—पुं०—–—उरभ्र-ठञ्—गड़रिया
- **औरस**—वि०——–उरसा निर्मितः - अण्—कोख से उत्पन्न, विवाहिता पत्नी से उत्पन्न, वैध
- **औरसः**—पुं०——–उरसा निर्मितः - अण्—वैध पुत्र या पुत्री
- **औरसी**—स्त्री०—–—उरसा निर्मितः - अण्—वैध पुत्र या पुत्री
- **औरस्य**—वि०——–उरसा निर्मितः - अण्—औरस
- **और्ण**—वि०—–—ऊर्णा-अञ्, वुञ् वा—ऊनी, ऊन से बना हुआ
- **और्णक**—वि०—–—ऊर्णा-अञ्, वुञ् वा—ऊनी, ऊन से बना हुआ
- **और्णिक**—वि०——–ऊर्णा-अञ्, वुञ् वा—ऊनी, ऊन से बना हुआ
- **और्ध्वकालिक**—वि०—–—ऊर्ध्वकाल-ष्ठञ्—पिछले समय से संबद्ध या बाद का
- **और्ध्वदेहम्**—नपुं०—–—ऊर्ध्वदेह-अण्—अन्त्येष्टि संस्कार, प्रेतकर्म
- **और्ध्वदेहिक**—वि०—–—ऊर्ध्वदेहाय साधु - ठञ्—मृत व्यक्ति से संबद्ध, अन्त्येष्टि
- **और्ध्वदैहिक**—वि०—–—ऊर्ध्वदेहाय साधु - ठञ्—मृत व्यक्ति से संबद्ध, अन्त्येष्टि
- **और्ध्वदैहिकक्रिया**—स्त्री०—और्ध्वदेहिक-क्रिया—–—प्रेतकर्म, अन्त्येष्टि संस्कार, प्रेतकर्म।
- **और्ध्वदैहिकक्रिया**—स्त्री०—और्ध्वदैहिक-क्रिया——–प्रेतकर्म, अन्त्येष्टि संस्कार, प्रेतकर्म।
- **और्ध्वदेहिकम्**—नपुं०————अन्त्येष्टि संस्कार, प्रेतकर्म।
- **और्ध्वदैहिकम्**—नपुं०———–—अन्त्येष्टि संस्कार, प्रेतकर्म।
- **और्व**—वि०——–ऊरु-अण्—धरती से सम्बन्ध रखने वाला
- **और्व**—वि०——–ऊरु-अण्—जंघा से उत्पन्न
- **और्वः**—पुं०——–ऊरु-अण्—एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम
- **और्वः**—पुं०——–ऊरु-अण्—वडवाग्नि
- **औलूकम्**—नपुं०——–उलूकानां समूहः-अञ्—उल्लुओं का झुण्ड
- **औलूक्यः**—पुं०——–उलूकस्यापत्य-यञ्—वैशेषिक दर्शन के निर्माता कणाद मुनि

- **औल्वण्यम्**—नपुं°—-—उल्वण-ष्यञ—आधिक्य, बहुतायत, प्राबल्य
- **औशन**—वि°—-—-—उशना अर्थात शुक्राचार्य से सम्बन्ध रखने वाला, उशना से उत्पन्न या उशना से पढ़ा हुआ
- **औशनस**—वि°—-—-—उशना अर्थात शुक्राचार्य से सम्बन्ध रखने वाला, उशना से उत्पन्न या उशना से पढ़ा हुआ
- **औशनसम्**—नपुं°—-—-—उशना का धर्मशास्त्र
- **औशीनरः**—पुं°—-—उशीनरस्यापत्यम्-अङ्—ऊशीनर का पुत्र
- **औशीनरी**—स्त्री°—-—-—राजा पुरुरवा की पत्नी
- **औशीरम्**—नपुं°—-—उशीर-अण्—पंखे या चँवर की डंडी
- **औशीरम्**—नपुं°—-—उशीर-अण्—बिस्तरा
- **औशीरम्**—नपुं°—-—उशीर-अण्—आसन
- **औशीरम्**—नपुं°—-—उशीर-अण्—खस का लेप
- **औशीरम्**—नपुं°—-—उशीर-अण्—खस की जड़
- **औशीरम्**—नपुं°—-—उशीर-अण्—पंखा
- **औषणम्**—नपुं°—-—उषण-अण्—तीक्ष्णता, तीखापन
- **औषणम्**—नपुं°—-—उषण-अण्—काली मिर्च
- **औषधम्**—नपुं°—-—औषधि-अण्—जड़ी-बूटी,जड़ी-बूटियों का समूह
- **औषधम्**—नपुं°—-—औषधि-अण्—दवादारू, सामान्य औषधि
- **औषधम्**—नपुं°—-—औषधि-अण्—खनिज
- **औषधिः**—स्त्री°—-—-—जड़ी-बूटी, बनस्पति
- **औषधिः**—स्त्री°—-—-—रोगनाशक जड़ी-बूटी
- **औषधिः**—स्त्री°—-—-—आग उगलने वाली जड़ी
- **औषधिः**—स्त्री°—-—-—वर्ष भर रहने वाला या सालाना पतझड़ वाला पौधा
- **औषधी**—स्त्री°—-—-—जड़ी-बूटी, बनस्पति
- **औषधी**—स्त्री°—-—-—रोगनाशक जड़ी-बूटी
- **औषधी**—स्त्री°—-—-—आग उगलने वाली जड़ी
- **औषधी**—स्त्री°—-—-—वर्ष भर रहने वाला या सालाना पतझड़ वाला पौधा
- **औषधिपतिः**—पुं°—औषधिः-धिपतिः—-—सोम, औषधियों का स्वामी
- **औषधिपतिः**—पुं°—औषधी-धिपतिः—-—सोम, औषधियों का स्वामी

- **औषधीय**—वि०—-—औषध-छ—औषधि संबन्धी रोगनाशक, जड़ी-बूटियों से युक्त
- **औषरम्**—नपुं०—-—उषरे भवम्-अण्, ततः कन्—सेंधा नमक,पहाड़ी नमक
- **औषरकम्**—नपुं०—-—उषरे भवम्-अण्, ततः कन्—सेंधा नमक,पहाड़ी नमक
- **औषस**—वि०—-—उषस्-अण्—उषा या प्रभात से सम्बन्ध ररखने वाला
- **औषसी**—स्त्री०—-—उषस्-अण्—पौ फटना, प्रभात काल
- **औषसिक**—वि०—-—उषस्-ठञ् उषा-ठञ् वा—जिसने प्रभात काल में जन्म लिया है, उषःकाल में उत्पन्न।
- **औषिक**—वि०—-—उषस्-ठञ् उषा-ठञ् वा—जिसने प्रभात काल में जन्म लिया है, उषःकाल में उत्पन्न।
- **औष्ट्र**—वि०—-—उष्ट्र-अण्—ऊँट से उत्पन्न या ऊँट से सम्बन्ध रखने वाला
- **औष्ट्र**—वि०—-—उष्ट्र-अण्—जहाँ ऊँटों की बहुतायत हो
- **औष्ट्रम्**—नपुं०—-—उष्ट्र-अण्—ऊँटनी का दूध
- **औष्ट्रकम्**—नपुं०—-—उष्ट्र-वुञ्—ऊँटों का झुण्ड
- **औष्ठ्य**—वि०—-—ओष्ठ-यत्—होठ से सम्बद्ध, ओष्ठ स्थानीय
- **औष्ठ्यवर्णः**—पुं०—औष्ठ्य-वर्णः—-—ओष्ठस्थानीय अक्षर-अर्थात् उ,ऊ,प्,फ्,ब्,भ्,म्,और व्
- **औष्ठ्यस्थान**—वि०—औष्ठ्य-स्थान—-—होठों द्वारा उच्चरित
- **औष्ठयस्वरः**—पुं०—औष्ठय-स्वरः—-—ओष्ठस्थानीय अस्वर
- **औष्णम्**—नपुं०—-—उष्ण-अण्—गर्मी,ताप
- **औष्ण्यम्**—नपुं०—-—उष्ण-ष्यञ्—गर्मी
- **औष्म्यम्**—नपुं०—-—उष्म-ष्यञ्—गर्मी

---